केशव संवाद

ISSN No. 2581-3528

अंक : 1 जुलाई-2026 RNI No. UPHIN/2000/03766 ₹ : 20

नया भारत, नई उड़ान

स्टार्टअप संस्कृति नये भारत की पहचान

AI Generated

कथन

हम जनजाति को आदिवासी कहते हैं, कोई उनको वनवासी कहते हैं। यह आदिम आदिवासी जो सृष्टि के आरंभ से ही इस धरा पर रहते हैं, और उनके जीवन शैली में आध्यात्मिकता भरी हुयी है, तथा वो सुख, शांति, आनंद, और प्रेम में जीना जानते हैं। हिंसा से दूर रहते हैं। आदिम काल में जैसे थे, आज भी ऐसे ही हैं, जैसे कि गीली मिट्टी उसको जैसे बनाओ वैसे बनते हैं। वो प्रकृति की पूजा करते हैं, लेकिन केवल प्रकृति नहीं, पंच तत्व को पूजा करते हैं। ये धरती, ये आकाश, वायु, जल, सूर्य, चंद्र इसको पूजा करते हैं।

– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन चुका है और देश में 23 लाख 30 हजार से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप काम कर रहे हैं। यह बदलाव केवल बड़े शहरों तक सीमित नहीं है बल्कि छोटे शहरों और कस्बों के युवा भी इनोवेशन और उद्यमिता में शानदार प्रदर्शन कर रहे, स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं को नौकरी खोजने वाला नहीं बल्कि रोजगार देने वाला बनाया है। इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है और आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार हो रहा है। हैं।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

हमारी परंपरा कहती है कि हम सभी इस सृष्टि के अभिन्न अंग हैं और प्रकृति का प्रत्येक तत्व हमारा है। तुलसी का पौधा भी हमारे लिए माता के समान है, गाय भी माता है, और जीवनदायिनी नदियाँ भी माता स्वरूप हैं। इस कृतज्ञता को लेकर तुमको जीवन जीना है और दोनों हाथों से कमाकर हजार हाथों से बांटना है।

–डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

कन्वर्जन की गतिविधियों को रोकने के लिए समाज में जागरूकता, एकता, समरसता और सेवा कार्यों को बढ़ाने पर जोर दिया जाए। विशेष रूप से जनजातीय और कमजोर वर्गों के बीच शिक्षा, सेवा और सामाजिक सशक्तिकरण के माध्यम से कार्य करने की जरूरत है केवल बीजेपी ही नहीं, हिमाचल प्रदेश कांग्रेस सरकार के वीरभद्र सिंह जी कन्वर्जन के विरुद्ध कानून लाए थे, सामाजिक संगठनों को जोड़ने तथा सेवा कार्यों को विस्तार देना कन्वर्जन का विरोध करना जरूरी है।

–दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अयोध्या के नागरिक केवल एक नगर के निवासी नहीं, बल्कि प्रभु श्रीराम की पावन जन्मभूमि और विश्व की महान आध्यात्मिक-सांस्कृतिक नगरी के गौरवशाली प्रतिनिधि हैं, वर्तमान पीढ़ी अत्यंत सौभाग्यशाली है, जिसने लगभग 500 वर्षों के लंबे संघर्ष और अनगिनत रामभक्तों के त्याग, बलिदान तथा समर्पण के बाद रामलला के भव्य मंदिर और प्रकटीकरण का ऐतिहासिक क्षण देखा, यह उपलब्धि उन पीढ़ियों के अथक प्रयासों का परिणाम है, जिन्होंने श्रीराम के आदर्शों और आस्था की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष किया।

–योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

1 जुलाई, 2026

वर्ष : 26 अंक : 07

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र कुमार चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

बोलते न्यायालय....05
नवाचार....06
समृद्ध सशक्त भारत एवं युवा संकल्प....07
अंतरराष्ट्रीय जगत में हिन्दुत्व....08
सोशल मीडिया में ट्रेंडिंग हिन्दुत्व....09
हिन्दुत्व के समाचार....10
एनसीआर समाचार....11
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य....12
आनुषांगिक संगठन....13
वक्तव्य....14
भारत की सीमाएं एवं सुरक्षा....15
महत्वपूर्ण दिवस (जुलाई 2026)....16
लव जिहाद पर विश्लेषण एवं पुरखों की ओर....17
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां....18
उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ....19
युवा संवाद....20
उत्तर प्रदेश के अनुकरणीय कार्य....21
महान क्रांतिकारी....22
वीरांगनाएं 23
खेल समाचार....24
आरोग्य (आयुर्वेद - चिकित्सा)....25
आत्मनिर्भरता के समाचार....26
पुस्तक समीक्षा....27
फिल्म समीक्षा (भारत भाग्य विधाता)....28
अंतरिक्ष अनुसंधान में एआई का बढ़ता उपयोग....29
यंग अचीवर्स....30
प्रेरक प्रसंग (गृहस्थ की भक्ति)....31
प्रेरक कहानी (ससुराल)....32
बाल कहानी/कविता....33
पाठक कोना....34

पाठकगण आपसे आग्रह है कि नीचे दिए गए QR CODE को स्कैन कर केशव संवाद पत्रिका के सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जुड़े।

@keshavksamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad | @samvadkeshav

उद्यमिता की लौ से आलोकित होता नया भारत

भारत की विकास-गाथा में आज एक नया अध्याय जुड़ रहा है। यह अध्याय केवल उद्योगों, पूंजी और बाजार का नहीं है, बल्कि सपनों को संकल्प में और संकल्प को सृजन में बदलने वाली युवा चेतना का है। देश के कोने-कोने में उठती उद्यमिता की यह लहर बताती है कि भारत अब संभावनाओं को देखने वाला राष्ट्र मात्र नहीं, बल्कि उन्हें साकार करने वाला आत्मविश्वासी राष्ट्र बन चुका है।

कभी युवाओं के सामने सफलता का सबसे सुरक्षित मार्ग नौकरी माना जाता था। परिवारों की अपेक्षाएं भी प्रायः इसी दिशा में केंद्रित रहती थीं। किंतु आज परिस्थितियां बदल रही हैं। नई पीढ़ी प्रश्न पूछ रही है, समस्याओं को पहचान रही है और उनके समाधान खोजने का साहस भी कर रही है। वह केवल अवसर पाने की प्रतीक्षा नहीं करती, बल्कि अपने ज्ञान, कौशल और तकनीक के माध्यम से अवसरों की नई राह तैयार करती है। यही मानसिक परिवर्तन भारत की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

उद्यमिता का वास्तविक अर्थ केवल लाभ कमाना नहीं है। उसका उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं को समझना, संसाधनों का रचनात्मक उपयोग करना और जनजीवन को सरल बनाने वाले समाधान विकसित करना है। जब कोई युवा किसान की उपज को बेहतर बाजार तक पहुंचाने का माध्यम बनता है, जब कोई विद्यार्थी शिक्षा को अधिक सुलभ बनाने के लिए डिजिटल साधन तैयार करता है, जब कोई महिला अपने घरेलू कौशल को स्वावलंबन का माध्यम बनाती है, तब उद्यमिता केवल व्यापार नहीं रहती बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन की शक्ति बन जाती है।

भारत के छोटे नगरों और कस्बों में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। वहां की प्रतिभा लंबे समय तक सीमित अवसरों, संसाधनों की कमी और उचित मार्गदर्शन के अभाव से जूझती रही। अब डिजिटल संपर्क, कौशल प्रशिक्षण, स्थानीय नवाचार और नए बाजारों तक पहुंच ने उस प्रतिभा को अभिव्यक्ति दी है। कस्बों की गलियों से निकलने वाले विचार आज राष्ट्रीय मंचों तक पहुंच रहे हैं। यह परिवर्तन विकास को केवल महानगरों का विशेषाधिकार नहीं रहने देता, बल्कि उसे जन-जन की भागीदारी का उत्सव बना देता है।

इस नवभारत की उड़ान में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत प्रेरक है। वे अब केवल परिवार की आर्थिक सहयोगी नहीं, बल्कि निर्णय लेने वाली, नेतृत्व करने वाली और नए रोजगारों का सृजन करने वाली शक्ति बन रही हैं। उनकी सफलता समाज की उस सोच को बदल रही है, जिसमें महिलाओं की क्षमता को सीमित दायरे में देखा जाता था। महिला उद्यमिता आत्मसम्मान, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता का सशक्त आधार है।

फिर भी इस यात्रा को निरंतर सहयोग की आवश्यकता है। नवाचार को पूंजी चाहिए, विचारों को मार्गदर्शन चाहिए और युवाओं को असफलता से उबरने का साहस चाहिए। शिक्षण संस्थानों को भी परीक्षा-केंद्रित दृष्टि से आगे बढ़कर जिज्ञासा, प्रयोग, नेतृत्व और समस्या-समाधान की संस्कृति विकसित करनी होगी। समाज को भी युवाओं के नए विचारों पर विश्वास करना होगा।

भारत की नई उड़ान का आकाश व्यापक एवं विस्तृत है। यदि युवा ऊर्जा को अवसर, महिला शक्ति को सम्मान और स्थानीय प्रतिभा को मंच मिलता रहा, तो उद्यमिता की यह लौ केवल अर्थव्यवस्था को ही नहीं, बल्कि भारत के आत्मविश्वास, स्वाभिमान और भविष्य को भी आलोकित करती रहेगी।

सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले :
नागरिक अधिकार, लोकतंत्र, स्वास्थ्य, न्याय और समानता की नई दिशा

संकलनकर्ता – डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय संविधान केवल शासन की रूपरेखा निर्धारित करने वाला दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक की गरिमा, स्वतंत्रता और अधिकारों का संरक्षक भी है। समय-समय पर उच्चतम न्यायालय अपने निर्णयों के माध्यम से संविधान की मूल भावना को नए संदर्भों में व्याख्यायित करता रहा है। मई और जून २०२६ के दौरान आए कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों ने एक बार फिर यह स्पष्ट किया है कि न्यायपालिका केवल कानूनी विवादों का समाधान करने वाली संस्था नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों की प्रहरी भी है।

जीवन बचाने की संवैधानिक जिम्मेदारी : ट्रॉमा केयर को मौलिक अधिकार के दायरे में लाने की पहल

मई 2026 के अंतिम सप्ताह में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक निर्णय देते हुए कहा कि दुर्घटना या किसी गंभीर आपात स्थिति में समय पर ट्रॉमा केयर उपलब्ध होना संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्राप्त जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का अभिन्न हिस्सा है। न्यायालय ने माना कि देश में प्रतिवर्ष हजारों लोग सड़क दुर्घटनाओं में केवल इसलिए अपनी जान गंवा देते हैं क्योंकि उन्हें समय पर चिकित्सा सहायता नहीं मिल पाती। अदालत ने केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि ट्रॉमा सेंटरों का सशक्त नेटवर्क विकसित किया जाए, आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं को बेहतर बनाया जाए तथा दुर्घटना पीड़ितों तक शीघ्र सहायता पहुंचाने के लिए प्रभावी व्यवस्था तैयार की जाए। यह निर्णय इसलिए विशेष महत्व रखता है क्योंकि इससे जीवन के अधिकार की संवैधानिक व्याख्या और व्यापक हुई है।

शुद्ध मतदाता सूची और सुरक्षित मताधिकार : लोकतंत्र के दो महत्वपूर्ण स्तंभ

हाल के महीनों में बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन – एसआईआर) को लेकर व्यापक चर्चा हुई। इस प्रक्रिया से जुड़े प्रश्न न्यायालय तक भी पहुंचे। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत सामने आया कि लोकतंत्र की विश्वसनीयता के लिए मतदाता सूची का शुद्ध और अद्यतन होना आवश्यक है, लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कोई पात्र नागरिक केवल तकनीकी कारणों से मतदान के अधिकार से वंचित न हो। मताधिकार भारतीय लोकतंत्र की आत्मा है। यह केवल एक कानूनी अधिकार नहीं, बल्कि नागरिक की लोकतांत्रिक भागीदारी का सबसे प्रभावी माध्यम है। चुनावी प्रक्रिया की शुचिता और नागरिक अधिकारों के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

केवल न्याय नहीं, समय पर मिले न्याय : लंबित फैसलों पर सुप्रीम कोर्ट का हस्तक्षेप

लोकतंत्र में न्यायपालिका पर जनता का विश्वास तभी कायम रह सकता है जब न्याय समय पर मिले। इसी संदर्भ में मई 2026 में सुप्रीम कोर्ट ने न्यायिक प्रक्रिया में अनावश्यक देरी को लेकर महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए। अदालत ने कहा कि सुरक्षित रखे गए निर्णयों को लंबे समय तक लंबित रखना उचित नहीं है और सामान्यतः तीन महीने के भीतर उनका निराकरण किया जाना चाहिए। साथ ही जमानत जैसे मामलों में आदेशों को शीघ्र जारी करने पर भी बल दिया गया। न्यायालय का यह हस्तक्षेप केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा का प्रयास है।

विवाह, करियर और समानता : भारतीय नारी के अधिकारों पर न्यायालय की स्पष्ट दृष्टि

महिलाओं के अधिकारों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण फैसला भी सामने आया। एक वैवाहिक विवाद की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि किसी महिला द्वारा अपने करियर, शिक्षा या पेशेवर जीवन को प्राथमिकता देना वैवाहिक क्रूरता नहीं माना जा सकता। अदालत ने कहा कि आधुनिक भारत में महिलाओं को अपनी आकांक्षाओं और प्रतिभा के अनुरूप जीवन जीने का पूरा अधिकार है। यह फैसला केवल एक पारिवारिक विवाद तक सीमित नहीं है। इसके व्यापक सामाजिक निहितार्थ हैं। आज महिलाएं देश के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। न्यायालय ने अपने निर्णय के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि विवाह किसी महिला की स्वतंत्र पहचान और पेशेवर महत्वाकांक्षाओं को समाप्त नहीं कर सकता। यह संविधान द्वारा प्रदत्त समानता और गरिमा के अधिकार की पुनर्पुष्टि है।

नया भारत, नई उड़ान : स्टार्टअप संस्कृति से सशक्त युवा और सम्मानित महिलाएं

संकलनकर्ता – कृष डबास, छात्र

"नया भारत, नई उड़ान; स्टार्टअप भारत इसकी पहचान।
युवाओं ने रचा नया कीर्तिमान; महिलाओं ने भी पाया सम्मान।"

ये पंक्तियाँ आज के भारत की बदलती तस्वीर को सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं। भारत अब केवल संभावनाओं का देश नहीं, बल्कि उन संभावनाओं को नवाचार, तकनीक और उद्यमिता के माध्यम से वास्तविकता में बदलने वाला राष्ट्र बन रहा है। स्टार्टअप संस्कृति ने देश की आर्थिक सोच को नई दिशा दी है और युवाओं को नौकरी खोजने वाले से रोजगार देने वाले उद्यमी के रूप में स्थापित किया है।

31 मार्च 2026 तक भारत में 2.23 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं, जिन्होंने 23.36 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार सृजित किए हैं। वित्त वर्ष 2025–26 में ही 55,200 से अधिक नए स्टार्टअप मान्यता प्राप्त हुए, जो एक वर्ष में अब तक की सर्वाधिक संख्या है। यह उपलब्धि बताती है कि भारत का युवा केवल अवसरों की प्रतीक्षा नहीं कर रहा, बल्कि अपने विचारों, कौशल और साहस से नए अवसरों का निर्माण कर रहा है।

भारत की स्टार्टअप यात्रा की सबसे प्रेरक विशेषता यह है कि यह केवल दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद जैसे महानगरों तक सीमित नहीं है। छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों के युवा भी नवाचार की नई कहानियाँ लिख रहे हैं। उत्तर प्रदेश के मेरठ, आगरा, कानपुर, प्रयागराज, गोरखपुर, झाँसी और वाराणसी; राजस्थान के कोटा, अजमेर, उदयपुर और बीकानेर; मध्य प्रदेश के इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन; बिहार के पटना, भागलपुर और गया; तथा कर्नाटक के मैसूरु, धारवाड़, हुब्बली, तुमकुरु और कलबुर्गी जैसे शहर उद्यमिता के उभरते केंद्र बन रहे हैं।

इन छोटे शहरों के युवा कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, ई–कॉमर्स, डिजिटल सेवाओं, पर्यावरण, ऊर्जा, हस्तशिल्प और स्थानीय उत्पादों के क्षेत्र में नवाचार कर रहे हैं। कोई युवा किसानों को बाजार से जोड़ने के लिए डिजिटल मंच विकसित कर रहा है, कोई स्थानीय कारीगरों के उत्पादों को ऑनलाइन बाजार तक पहुँचा रहा है, तो कोई शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को तकनीक के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रकार स्थानीय समस्याओं के स्थानीय समाधान तैयार हो रहे हैं और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिल रही है।

स्टार्टअप इंडिया, सीड फंड, इनक्यूबेशन केंद्र, मेंटरशिप तथा ऋण–गारंटी जैसी योजनाओं ने युवाओं को अपने विचारों को

AI Generated

उद्यम में बदलने का अवसर दिया है। सरकार के अनुसार, मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में लगभग 48 प्रतिशत अर्थात् 1.07 लाख से अधिक स्टार्टअप्स में कम–से–कम एक महिला निदेशक अथवा भागीदार है। यह आँकड़ा महिला उद्यमिता के बढ़ते आत्मविश्वास और भारत की समावेशी विकास–यात्रा का प्रमाण है।

आज महिलाएँ फैशन, खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प, जैविक उत्पाद, स्वास्थ्य सेवाएँ, डिजिटल शिक्षा, ई–कॉमर्स और सामाजिक उद्यमिता के क्षेत्र में सफलतापूर्वक नेतृत्व कर रही हैं। स्वयं सहायता समूहों और घरेलू उद्योगों से जुड़ी महिलाएँ भी स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित कर रही हैं। इससे महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता और सामाजिक सम्मान में वृद्धि हुई है।

भारत की स्टार्टअप संस्कृति अब केवल मोबाइल एप या ऑनलाइन सेवाओं तक सीमित नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव–प्रौद्योगिकी, स्वच्छ ऊर्जा, रोबोटिक्स, डिजिटल भुगतान और रक्षा तकनीक जैसे क्षेत्रों में भी भारतीय युवा नए प्रयोग कर रहे हैं। तकनीक और नवाचार का यह संगम आत्मनिर्भर भारत की नई पहचान बन रहा है।

नया भारत वास्तव में नई उड़ान भर रहा है। स्टार्टअप भारत उसकी पहचान है, युवा उसका आत्मविश्वास हैं और महिलाएँ उसकी सशक्त शक्ति हैं। जब छोटे शहरों और कस्बों की प्रतिभा को उचित मंच, संसाधन और मार्गदर्शन मिलेगा, तब भारत केवल आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि विश्व के लिए नवाचार और उद्यमिता का प्रेरक केंद्र भी बनेगा।

विकसित, समृद्ध एवं सशक्त भारत के निर्माण में युवाओं की निर्णायक भूमिका

– संकलनकर्ता कुमारी साक्षी, शोधार्थी

"युवा शक्ति ही राष्ट्र शक्ति है" – यह केवल एक प्रेरक वाक्य नहीं, बल्कि विकसित भारत के संकल्प की आधारशिला है। भारत आज विश्व की सबसे युवा आबादी वाले देशों में अग्रणी है। यह युवा ऊर्जा यदि ज्ञान, कौशल, नवाचार, अनुशासन और राष्ट्रभावना से जुड़ जाए, तो वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य केवल स्वप्न नहीं, बल्कि साकार वास्तविकता बन सकता है। इसी उद्देश्य से आयोजित विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2026 ने युवाओं को नीति–निर्माण, नवाचार, नेतृत्व, सुरक्षा, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने का एक सशक्त राष्ट्रीय मंच प्रदान किया है।

इस संवाद में देशभर से 50 लाख से अधिक युवाओं की भागीदारी यह सिद्ध करती है कि भारत का युवा केवल रोजगार पाने वाला नहीं, बल्कि रोजगार सृजित करने वाला, समस्याओं का समाधान खोजने वाला और राष्ट्र की दिशा तय करने वाला नागरिक बनना चाहता है। इस मंच पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल जी ने युवाओं को राष्ट्र–सुरक्षा, आत्मबल और दृढ़ संकल्प का संदेश दिया, जबकि केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया जी की उपस्थिति ने युवा नेतृत्व को नई ऊर्जा प्रदान की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी युवाओं की रचनात्मकता, नवाचार और उद्देश्यपूर्ण ऊर्जा को राष्ट्र–निर्माण की अग्रिम शक्ति बताया है।

उत्तर प्रदेश के युवाओं की भूमिका इस राष्ट्रीय अभियान में विशेष रूप से प्रेरक है। विशाल जनसंख्या और व्यापक युवा आधार वाला उत्तर प्रदेश आज केवल प्रतिभा का केंद्र नहीं, बल्कि स्टार्टअप, कौशल, कृषि–नवाचार, डिजिटल सेवाओं और स्वरोजगार का उभरता हुआ केंद्र बन रहा है। प्रदेश में 17,000 से अधिक स्टार्टअप सक्रिय बताए गए हैं; इनमें 8 यूनिकॉर्न, 72 इन्क्यूबेटर और 7 सेंटर ऑफ एक्सीलेंस नवाचार की मजबूत आधारभूमि तैयार कर रहे हैं। यह परिवर्तन दर्शाता है कि उत्तर प्रदेश का युवा अब नौकरी की प्रतीक्षा करने के बजाय तकनीक, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, ई–कॉमर्स और स्थानीय उत्पादों के क्षेत्र में नए अवसर निर्मित कर रहा है।

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी योजना और मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना जैसी पहलें युवाओं को आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ा रही हैं। स्वरोजगार योजना के अंतर्गत औद्योगिक इकाइयों के लिए 25 लाख रुपये तक तथा सेवा क्षेत्र के लिए 10 लाख रुपये तक के ऋण की सुविधा युवाओं को अपने सपनों को उद्यम में बदलने का अवसर दे रही है।

लखनऊ में आयोजित सीएम युवा कॉन्क्लेव एवं एक्सपो में 30,000 से अधिक युवाओं की भागीदारी, 10,000 व्यावसायिक बैठकों और 8,380 संभावित उद्यमियों का उभरना इस बात का प्रमाण है कि उत्तर प्रदेश की युवा शक्ति अवसर मिलने पर असाधारण परिणाम दे सकती है।

आज आवश्यकता है कि युवा केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित न रहें, बल्कि स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, महिला सम्मान, डिजिटल साक्षरता, ग्रामीण विकास, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में भी सक्रिय नेतृत्व करें। उत्तर प्रदेश का युवा यदि अपने कौशल को संस्कारों, नवाचार को नैतिकता और सफलता को समाज–सेवा से जोड़ेगा, तो वह न केवल प्रदेश, बल्कि पूरे भारत को विकसित, समृद्ध और सशक्त बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएगा।

युवा जागेगा, नवाचार बढ़ेगा;
भारत आगे बढ़ेगा, विश्व में ऊँचा चढ़ेगा।

ब्रिटेन की अदालत में मंदिर मामले में हिन्दुओं की अंतरिम जीत

संकलनकर्ता – डॉ. विनोद कुमार, प्रभारी हिन्दी विभाग,राजकीय महाविद्यालय गाजियाबाद

पीटरबरो शहर के हिन्दुओं की जीत हुई है और उनके विरुद्ध उनके एकमात्र धार्मिक स्थल को छीने जाने और उसे समाप्त किए जाने का षड्यंत्र असफल हो गया है। ब्रिटेन के पीटरबरो शहर में 40 वर्षों से स्थापित एवं संचालित भारत हिंदू समाज मंदिर को वहां की नगर परिषद द्वारा इस्लामी मिशन को बेचे जाने पर रॉयल कोर्ट ऑफ जस्टिस ने रोक लगा दी है। अदालत ने इस बिक्री प्रक्रिया को गैर कानूनी और रद्द किए जाने योग्य बताया है। अब पूरा मामला सुने जाने और अंतिम निर्णय आने तक पीटरबरो नगर परिषद इस मंदिर की इमारत या जमीन को इस्लामिक मिशन को या किसी अन्य को नहीं बेच सकेगी।

भारत हिंदू समाज मंदिर पीटरबरो, ब्रिटेन में न्यू इंग्लैंड कांपलेक्स, रॉक रोड पर स्थित है। यह मंदिर कैम्ब्रिजशायर, नॉरफॉक, लिंकनशायर और लीसेस्टरशायर के लगभग 18,000 हिंदुओं का सिर्फ पूजा स्थल नहीं, बल्कि उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का एकमात्र केंद्र भी है। पीटरबरो सिटी काउंसिल से वहां के हिन्दू समाज द्वारा इस इमारत को वर्ष 1986 में 25 वर्षों के लीज पर लिया गया था। 2011 में लीज की अवधि समाप्त हो गई थी और अब इसे सिटी काउंसिल बेचना चाहती थी। भारत हिंदू समाज द्वारा इस इमारत को खरीदने के लिए 1.3 मिलियन का ऑफर भी दिया गया किंतु यूनाइटेड किंगडम इस्लामिक मिशन द्वारा इस एकमात्र हिंदू पूजास्थल को खरीदने में बहुत उत्सुकता दिखाई गई और उसे खरीदने के लिए हिंदू समाज की बोली से 5 प्रतिशत ज्यादा धनराशि का ऑफर दे दिया गया जबकि इस्लामिक मिशन के पास इस शहर में 40 से अधिक मस्जिद और 64 से अधिक इस्लामिक केंद्र पहले से ही संचालित हैं। हिंदू समुदाय ने अपनी याचिका में कहा कि बिक्री प्रक्रिया में गंभीर खामियां थीं। मंदिर की जमीन की खरीदारी हेतु हिंदू समाज की सिटी काउंसिल से बातचीत 2017 से ही चल रही थी जबकि अचानक से 2025 में पीटरबरो सिटी काउंसिल ने 2010 के समानता अधिनियम को अनदेखा करते हुए हिंदू समुदाय के एकमात्र स्थल की बिक्री प्रक्रिया उस समाज के साथ प्रारंभ कर दी जिसने अधिक धनराशि ऑफर की और जिसके पास पहले से पर्याप्त धार्मिक स्थल हैं।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर वीडियो ट्रेंडिंग रहा

संकलनकर्ता – प्रकाश श्रीवास्तव

मई 2026 (मई 15 – मई 31)

भोजशाला परिसर का फैसला (15 मई 2026) – मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर बेंच द्वारा धार के भोजशाला परिसर पर आए ऐतिहासिक फैसले को सोशल मीडिया पर 'मां सरस्वती मंदिर' के पक्ष में एक बड़ी जीत के रूप में बहुत अधिक साझा किया गया तथा उत्सव मनाया गया। ▪▪▪

वैदिक पंचांग के अनुसार पुरुषोत्तम (अधिक) मास का आरंभ (17 मई 2026) : इस दिन से एक दुर्लभ 'अधिक मास' का प्रारम्भ हुआ जो वैदिक गणनाओं के अनुसार हिंदू धर्म में आध्यात्मिक नवीनीकरण का प्रतीक है। सोशल मीडिया पर आध्यात्मिक कल्याण के लिए इस महीने के महत्व को लेकर कई पोस्ट ट्रेंड हुए। ▪▪▪

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर वीडियो ट्रेंड (30 मई 2026) : वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के पुनर्निर्माण और इसके कारण प्राचीन छिपे हुए मंदिरों की भव्य पुनर्प्राप्ति से जुड़े वीडियो सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से वायरल हुए और इसे सनातन धरोहर की वापसी बताया गया। ▪▪▪

जून 2026 (जून 1 – जून 15)

कांचीपुरम मंदिर रथ उत्सव (4 जून 2026) : तमिलनाडु के कांचीपुरम में आयोजित वैकासी ब्रह्मोत्सवम के दौरान भव्य रथ उत्सव की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर ट्रेंडिंग रहे, जिसमें 1 लाख से अधिक श्रद्धालुओं की भारी उपस्थिति को हिंदू संस्कृति की जीवंतता के रूप में सराहा गया। ▪▪▪

अंबूबाची मेला 2026 की घोषणा और वायरल पोस्ट (8 जून 2026) : असम के गुवाहाटी में स्थित प्रसिद्ध कामाख्या देवी शक्तिपीठ में 22 से 26 जून तक आयोजित होने वाले 'अंबूबाची मेला 2026' की अग्रिम तारीखें 'सेव द डेट' (#SaveTheDate) अभियान के साथ सोशल मीडिया रील्स पर अत्यधिक वायरल होने लगीं। ▪▪▪

भरूच जामा मस्जिद का एएसआई (ASI) सर्वे विवाद (15 जून 2026) : गुजरात के भरूच में स्थित जामा मस्जिद के सीलबंद बेसमेंट में प्राचीन हिंदू व जैन मूर्तियों और नक्काशी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद हिंदू संगठनों द्वारा इसके एएसआई सर्वे की मांग को लेकर भारी डिजिटल समर्थन मिला। ▪▪▪

दुर्लभ त्रिकोणीय पवित्र संगम - सोमवती अमावस्या (15 जून 2026) : इस तिथि को हिंदू पंचांग के अनुसार एक अत्यंत दुर्लभ संयोग माना गया जब सोमवती अमावस्या मिथुन संक्रांति और पुरुषोत्तम अधिक मास का अंतिम दिन एक साथ पड़े (ऐसा संयोग हर 32–33 साल में एक बार होता है)। इसे लेकर पवित्र स्नान और अनुष्ठानों की तस्वीरें पूरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर ट्रेंड करती रहीं। ▪▪▪

मोहन भागवत का पलटवार (16 जून 2026 / पूर्व संध्या) : कर्नाटक के एक मंत्री द्वारा आरएसएस के पंजीकरण की मांग पर आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत का बयान ट्रेंड हुआ, उन्होंने तर्क दिया कि 'हिंदू धर्म भी कहीं पंजीकृत नहीं है', जिसे सनातन धर्म की असीम और शाश्वत प्रकृति के समर्थन में उपयोगकर्ताओं द्वारा खूब शेयर किया गया। ▪▪▪

अमेजन के विरुद्ध हिन्दू संगठनों में आक्रोश

संकलनकर्ता – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

16 मई 2026 : **मेरठ में हिंदू पहचान छिपाकर युवती को फंसाने का आरोप, धर्मांतरण प्रकरण चर्चा में** - दिल्ली में दर्ज मामले में मेरठ के फहीम पर साहिल बनकर हिंदू युवती से संबंध बनाने, धर्मांतरण के लिए दबाव डालने और शोषण के आरोप लगे। प्रकरण ने राष्ट्रीय स्तर पर हिंदू समाज की सुरक्षा और जागरूकता पर बहस को तेज किया।

18 मई 2026 : **प्रयागराज में सनातन धर्म अपनाने वाले प्रोफेसर को हाईकोर्ट से राहत** - इलाहाबाद हाईकोर्ट ने स्वेच्छा से सनातन धर्म अपनाने वाले व्यक्ति के मामले में प्रशासनिक प्रक्रिया पर सवाल उठाए और बार-बार जांच कराए जाने को लेकर टिप्पणी की। यह मामला धार्मिक स्वतंत्रता की बहस के केंद्र में रहा।

23 मई 2026 : **नई दिल्ली में धर्मांतरण और शोषण मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग सक्रिय** - दिल्ली के चर्चित प्रकरण में राष्ट्रीय महिला आयोग ने रिपोर्ट तलब की। महिला सुरक्षा, धार्मिक पहचान और कथित छलपूर्वक संबंधों के मुद्दे राष्ट्रीय चर्चा का विषय बने।

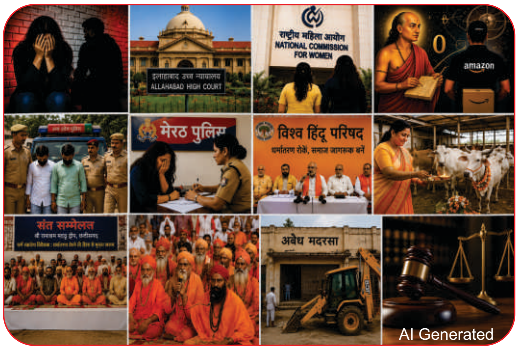

5 जून 2026 : **नई दिल्ली में आर्यभट्ट को लेकर विज्ञापन पर विवाद, अमेजन के खिलाफ हिंदू संगठनों में नाराजगी** - महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट को कथित रूप से डिलीवरी बॉय के रूप में दर्शाने वाले एक विज्ञापन को लेकर सोशल मीडिया और विभिन्न हिंदू संगठनों ने कड़ी आपत्ति जताई। संगठनों ने इसे भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का अपमान बताते हुए अमेजन से विज्ञापन वापस लेने तथा सार्वजनिक माफी की मांग की। विवाद के बाद कंपनी की भूमिका और विज्ञापन सामग्री को लेकर व्यापक बहस शुरू हो गई।

8 जून 2026 : **हरदोई में कथित धर्मांतरण गतिविधियों पर पुलिस कार्रवाई, दो गिरफ्तार** - हरदोई में शिकायत के बाद पुलिस ने धर्मांतरण से जुड़े आरोपों में मामला दर्ज किया। घटना के बाद स्थानीय स्तर पर धार्मिक जागरूकता और कानून के पालन को लेकर चर्चा बढ़ी।

9 जून 2026 : मेरठ, उत्तर प्रदेश में शादी का झांसा देकर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने का आरोप, युवती ने पुलिस से लगाई गुहार – मेरठ के सरधना क्षेत्र में एक हिंदू युवती ने युवक वसीम और उसके परिवार पर शादी का झांसा देकर शारीरिक शोषण तथा धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाने का आरोप लगाया। पीड़िता का कहना है कि संबंध स्थापित होने के बाद उस पर इस्लाम स्वीकार करने का दबाव डाला गया और इनकार करने पर प्रताड़ित किया गया। युवती ने पुलिस अधिकारियों को शिकायत सौंपकर कार्रवाई की मांग की है।

9 जून 2026 : प्रयागराज में विश्व हिंदू परिषद बोली– धर्मांतरण स्वीकार नहीं करेगा हिंदू समाज : वीएचपी पदाधिकारियों ने धर्मांतरण को गंभीर सामाजिक चुनौती बताते हुए समाज को जागरूक करने का आह्वान किया। संगठन ने हिंदू समाज को संगठित रहने का संदेश दिया। परिवारों और समाज को अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता बताई।

10 जून 2026 : नई दिल्ली में केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने पर गौशाला पहुंचीं रेखा गुप्ता, गौसेवा को भारतीय संस्कृति का आधार बताया – केंद्र सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किशनगंज स्थित पिंजरापोल गौशाला में पहुंचकर गौपूजन और विशेष आरती की। उन्होंने देश की समृद्धि तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की। रेखा गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने बिना अवकाश राष्ट्रसेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया है और उनके नेतृत्व में भारत ने विकास, संस्कृति और विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं।

11 जून 2026 : **मदकू द्वीप, छत्तीसगढ़ में संत सम्मेलन में धर्म स्वातंत्र्य विधेयक का स्वागत, धर्मांतरण रोकने को बताया आवश्यक कदम** - छत्तीसगढ़ के पवित्र श्री रामाश्रय मदकू द्वीप में आयोजित संत सम्मेलन में देश के विभिन्न अखाड़ों, मठों और धार्मिक संस्थाओं से जुड़े संत-महात्माओं ने भाग लिया। सम्मेलन में सनातन संस्कृति, समाज जागरण और धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़े विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। संतों ने छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा प्रस्तावित धर्म स्वातंत्र्य विधेयक का स्वागत करते हुए इसे कथित अवैध और प्रलोभन आधारित धर्मांतरण पर रोक लगाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।

11 जून 2026 : **सीतापुर में अवैध मदरसे पर प्रशासनिक कार्रवाई, जुर्माना भी लगाया गया** - सरकारी भूमि पर बने एक अवैध मदरसे के खिलाफ प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए जुर्माना लगाया। मामले ने सरकारी संपत्तियों के संरक्षण और कानून के समान अनुपालन पर चर्चा को जन्म दिया।

संकलनकर्ता – नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

नोएडा हवाई अड्डे से विमान ने भरी पहली व्यावसायिक उड़ान

ग्रेटर नोएडा : नोएडा हवाई अड्डे से सोमवार दिनांक – 15/06/2026 को वाणिज्यिक उड़ानों का संचालन शुरू हो गया। इसी के साथ जेवर ने देश की विमानन मानचित्र पर पहचान दर्ज कराते हुए इतिहास रच दिया। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू और जिले के प्रभारी मंत्री बृजेश सिंह ने बेंगलुरु के लिए पहली उड़ान को तिरंगा लहराकर रवाना किया। लखनऊ से इंडिगो की 6 ई 2278 फ्लाइट सुबह 7.55 बजे नोएडा एयरपोर्ट पर उतरते ही उसे पारंपरिक वाटर कैनन सेल्यूट दिया गया। विमान में बैठे यात्रियों ने भी तालियां बजाकर जश्न मनाया।

इसके बाद एयरपोर्ट से बेंगलुरु के लिए पहले विमान ने उड़ान भरी। तत्पश्चात एयरपोर्ट के लिए जमीन देने वाले 172 किसानों, जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह और प्रशासनिक अधिकारियों समेत कुल 186 लोगों को लेकर विशेष विमान सुबह 8.30 लखनऊ के लिए रवाना हुआ। इन किसानों के लखनऊ पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने आवास पर उनका भव्य स्वागत और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। नोएडा एयरपोर्ट से पहले दिन इंडिगो एयरलाइंस के विमानों ने लखनऊ, बेंगलुरु, हैदराबाद और अमृतसर के लिए उड़ान भरते ही नोएडा हवाई अड्डा अद्भुत ऐतिहासिक पल का साक्षी बना।

फुटपाथ पर पैदल चलना लोगों का मौलिक अधिकार : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को एक अहम फैसले में कहा कि फुटपाथ पर चलने का अधिकार लोगों का मौलिक अधिकार है। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट किया कि पैदल चलने वालों के अधिकार वाहनों से आवाजाही करने वालों के अधिकार से महत्वपूर्ण है, इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कोर्ट ने पैदल चलने के इस अधिकार के बेहतर क्रियान्वयन के लिए कानूनी ढांचा और एक नियामक इकाई बनाने की वकालत की है।

जस्टिस पी एस नरसिम्हा व ए एस चंदुरकर की पीठ ने फैसले में कहा है कि निर्धारित फुटपाथ पर चलने का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (डी) के तहत एक मौलिक अधिकार है, जिसमें सुरक्षित, सुलभ और उचित रूप से फुटपाथों तक पहुंच शामिल है। अदालत ने चलने के लिए सुरक्षित और आरामदायक फुटपाथों की कमी का जिक्र किया। पीठ ने कहा कि पैदल चलने के मौलिक अधिकार हेतु बस एक आसान और बेफिक्र चलने के लिए आरामदायक जगह चाहिए।

योगमय हुआ नोएडा, लोगों में दिखा उत्साह

ग्रेटर नोएडा/नोएडा : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिले में 500 से अधिक स्थानों पर योग अभ्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। लोगों द्वारा स्वस्थ रहने के लिए योग को जीवन का हिस्सा बनाने की प्रेरणा ली गई। मुख्य कार्यक्रम नोएडा के सेक्टर– 21 ए स्थित इंडोर स्टेडियम और ग्रेटर नोएडा के शहीद विजय सिंह पथिक खेल परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रदेश के राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार नरेंद्र कुमार कश्यप ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में योग ने वैश्विक स्तर पर भारत की पहचान को और अधिक सशक्त बनाया है। मुख्य कार्यक्रम में विधायक दादरी तेजपाल नागर, एमएलसी श्री चंद्र शर्मा, नरेंद्र भाटी, भाजपा जिला अध्यक्ष अभिषेक शर्मा, नोएडा महानगर अध्यक्ष महेश चौहान, सांसद प्रतिनिधि संजय वाली आदि ने योगाभ्यास किया।नोएडा में भी 250 से अधिक स्थानों पर योगाभ्यास किया गया। सेक्टर– 6 स्थित इंदिरा गांधी कला केंद्र में प्राधिकरण के अधिकारियों और कर्मचारियों ने योगाभ्यास किया। सेक्टर–51 चिल्ड्रन पार्क, सेक्टर–23 के पार्क में, सेक्टर –34 के सामुदायिक केंद्र में, सेक्टर–55, 62, 47 ,21, 78 आदि अनेक स्थानों के साथ–साथ बहुत सी सोसाइटियों में भी लोगों ने बड़े उत्साह के साथ योगाभ्यास कर योग को स्वास्थ्य और सुख का सूत्र मानते हुए अपने जीवन में योग को अपनाने का संकल्प लिया।

–डेस्क

मैं और राष्ट्र एक ही है, जो यह भाव लेकर राष्ट्र एवं समाज के साथ तन्मय होता है वहीं सच्चा राष्ट्रसेवक है। कुछ लोग बड़े अभिमान से कहते हैं कि 'राष्ट्र के लिए मैंने इतना त्याग किया'। इस प्रकार वे यह दिखा देते हैं कि वे राष्ट्र से अलग हैं। राष्ट्र के लिए खर्च करना, कष्ट सहना तो प्रत्येक घटक का पवित्र कर्तव्य है।

–डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार

'संघ के लिए हम हैं, अपने लिए संघ नहीं है' यह धारणा प्रत्येक स्वयंसेवक की होनी चाहिए। 'सामुद्रो हि तरंगः क्वचन समुद्रो न तारंग अर्थात् तरंग समुद्र का अंग हैं, समुद्र से तरंग का पृथक अस्तित्व नहीं है। यह अभेदता आवश्यक है। यह धारणा हो तो कौशल्य, कला, समयज्ञता, दृढ़ता आदि गुण स्वयंसेवकों में प्रकट होंगे। – श्री गुरुजी

संघ हिन्दू समाज को सामर्थ्य सम्पन्न करना चाहता है, संघ की इच्छा है कि यह सामर्थ्य समाज में स्वाभाविक रीति से सदैव विद्यमान रहे। किसी बाह्य संगठन द्वारा सदैव समाज की रक्षा की जाती रहे, यह उचित नहीं। समाज अपनी हर समस्या का समाधान स्वयमेव सदा करता रहे। इसी प्रकार के स्वाभाविक सामर्थ्य का जागरण संघ कर रहा है।

– बाला साहब देवरस

समाज परिवर्तन तो व्यक्ति के बदलने से होगा। शाखा के कार्यक्रमों से हिन्दू समाज में समरसता, अनुशासन और चरित्र निर्माण होता है। स्वयंसेवकों द्वारा चलाये जा रहे हजारों विद्यालय, सभी क्षेत्रों में लाखों सेवा कार्य कर रहे हैं। इसी से संघ के प्रति सम्पूर्ण समाज का विश्वास बढ़ रहा है।

– रज्जू भैय्या

हमारे यहाँ पर अनेक महापुरुष पैदा हुए, जिन्होंने समय के अनुसार हमारा युग धर्म क्या होना चाहिए, वह हमें बताया और उसके आधार पर हमारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था चलती रही। अब हमारा शाश्वत सिद्धांत तो अद्वैत का सिद्धांत था। परब्रह्म परमात्मा एक है और उसके अनेक रूप हैं, वहीं परमात्मा सबके अंदर आत्मरूप में विद्यमान है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अंदर अपने परमात्मा को देखे और अपनी जो आत्मा है, जो अज्ञान से घिरी हुई है, माया से घिरी हुई है, इस अज्ञान के पर्दे को दूर करता चला जाए, तो धीरे–धीरे एक–एक स्तर ऊपर उठता जाएगा।

– कु.सी. सुदर्शन

हमारी परंपरा कहती है कि हम सभी इस सृष्टि के अभिन्न अंग हैं और प्रकृति का प्रत्येक तत्व हमारा है। तुलसी का पौधा भी हमारे लिए माता के समान है, गाय भी माता है , और जीवनदायिनी नदियाँ भी माता स्वरूप हैं। इस कृतज्ञता को लेकर तुमको जीवन जीना है और दोनों हाथों से कमाकर हजार हाथों से बांटना है। – डॉ. मोहन भागवत

भारतीय कुष्ठ निवारक संघ

संकलनकर्ता – प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर

प्रस्तावना एवं स्थापना - संघ के एक गृहस्थ कार्यकर्ता सदाशिव गोविंद कात्रे रेलवे में नौकरी करते थे। फिर उन्हें कुष्ठ रोग ने घेर लिया, इससे उनके जीवन में संकट प्रारंभ हो गए। उन्होंने ईसाइयों के एक अस्पताल में इलाज कराते हुए इसे गहराई से देखा कुछ ठीक होने पर वह सरसंघचालक 'श्रीगुरु जी' से मिले। श्रीगुरु जी ने उन्हें इसी क्षेत्र में काम करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार 1962 में 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' की नींव पड़ी। 1976 में इसका विधिवत पंजीकरण हुआ।

मुख्यालय - भारतीय कुष्ठ निवारक संघ का मुख्यालय कात्रे नगर, चांपा (छत्तीसगढ़) में है।

संचालित कार्य व विस्तार- 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' रोगियों तथा उनके स्वस्थ बच्चों के लिए निःशुल्क झूला घर, विद्यालय, छात्रावास, तथा चिकित्सालय आदि चलाती है। रोगियों को दवा एवं पट्टियां भी दी जाती हैं। जिससे वे स्वयं ही घाव की सफाई कर लें। कुष्ठ के संक्रमण के प्रति सचेत कर उन्हें खेती और औद्योगिक प्रशिक्षण भी कराया जाता है।

कर्नाटक में एक वरिष्ठ प्रचारक स्वर्गीय वेंकटेश गुरु नायक ने 'स्वामी विवेकानंद कुष्ठ सेवा समिति' तथा 'दत्त बाल सेवा आश्रम' बनाकर व्यापक सेवा कार्य किया है। उन्हें 'गुलबर्गा' का गांधी कहा जाता है। वर्ष 2006 में केंद्र सरकार ने उन्हें 'राजीव गांधी राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया। इसी प्रकार 'दिव्य प्रेम सेवा मिशन हरिद्वार' के अध्यक्ष श्री आशीष गौतम कई वर्ष संघ के प्रचारक रहे, फिर उन्होंने यह सेवा कार्य प्रारंभ किया।

समाज में कार्य का परिणाम- एक ओर जहां समाज में कुष्ठ रोगी को अभिशाप तथा अस्पृश्य समझ कर घर से बाहर निकाल दिया जाता था, तथा वह अनेक पीड़ाओं को सहते हुए भिक्षावृत्ति पर जीने के लिए मजबूर हो जाता था, वहीं 'भारतीय कुष्ठ निवारक संघ' के माध्यम से समाज में अब कुष्ठ रोगियों के प्रति सेवा भाव से कार्य करने का भाव जागृत हुआ, जिसके कारण अनेक कार्यकर्ता प्रेरित होकर इस सेवा कार्य के लिए आगे आए। इसी प्रकार कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों में भी विभिन्न प्रकार के कौशलों से जोड़कर उनमें भिक्षावृत्ति छोड़कर स्वाभिमान से जीवन जीने का भाव जागृत हुआ।

भारतीय किसान संघ

प्रस्तावना एवं स्थापना - भारत एक कृषि प्रधान देश है। खेती हमारी अर्थव्यवस्था की रीड है, किसी समय 'उत्तम खेती मध्यम बान' की बात कही जाती थी, पर स्वाधीनता के बाद क्रमशः खेती की उपेक्षा होती गई। अतः बड़ी संख्या में लोग शहरों में आने को मजबूर हुए। खेती तथा किसान को फिर से प्रतिष्ठा मिले, इसके लिए अलग–अलग राज्यों में स्वयंसेवक काफी समय से कार्य कर रहे थे, उन्हें साथ लेकर श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी तथा श्री भाऊसाहब भुस्कुटे दोनों ने पूरे देश में घूम कर किसानों से भेंट की, तदुपरांत 4 मार्च 1979 को कोटा (राजस्थान) में भारतीय किसान संघ की स्थापना की।

मुख्यालय – 43 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।

सांगठनिक ढांचा – भारतीय किसान संघ का संपूर्ण देश में मजबूत सांगठनिक ढांचा है। जो खण्ड, जिला, प्रांत, क्षेत्र तथा राष्ट्रीय स्तर पर गठित है।

कार्य तथा उद्देश्य- भारतीय किसान संघ किसानों का, किसानों के लिए, किसानों द्वारा संचालित संगठन है। भगवे झंडे पर बना अखंड भारत, हल, गोवंश और हल – मूसलधारी बलराम इसके प्रतीक हैं। बलराम जयंती 'भाद्रपद कृष्ण षष्ठी' को 'राष्ट्रीय किसान दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय किसान संघ ग्रामीण कारीगरों, खेतीहर मजदूरों, दूध, मछली तथा रेशम उत्पादक आदि को भी किसान मानता है। क्योंकि उनकी आजीविका खेती पर ही निर्भर है किसान के परिवार का अंग होने से गोवंश का संरक्षण एवं संवर्धन जरूरी है। खेती मुख्यतः स्वदेशी पर आधारित हो, जिससे किसान स्वाभिमानी और स्वावलंबी बने। किसानों का शोषण बंद हो, उपज का समर्थन मूल्य लागत के आधार पर तय हो, भूमि का मालिक किसान रहे तथा शहरीकरण या उद्योगों के लिए खेतीहर भूमि न ली जाए।

समाज में परिवर्तन - 'भारतीय किसान संघ' संगठन और आंदोलन दोनों ही करता है। पर देश सर्वोपरि होने के कारण वह समाज में हिंसा और आमरण अनशन से परहेज करता है। रासायनिक खाद और कीटनाशकों के कारण आजकल खेत और फसल जहरीली हो रही है। जिसे भारतीय किसान संघ ने कृषि प्रदर्शनी एवं पशु मेला प्रशिक्षण शिविर एवं यात्राएं आयोजित कर समाज को जागृत किया है।

ध्येय वाक्य– 'कृषि मित् कृषस्व' (खेती ही करो)।

–डेस्क

डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा कार्यकर्ता विकास वर्ग द्वितीय में दिए गए वक्तव्य के कुछ अंश

- हम सुनते हैं कि एक समय भारत विश्वगुरु था और केवल आध्यात्मिक गुरु नहीं था। ईस्वी सन 1 से 1600 तक भारत आर्थिक दृष्टि से दुनिया का प्रथम देश था। ज्ञान–विज्ञान में भी हम सबसे ऊँचे थे। दुनिया का आज का भौतिक ज्ञान उसके मूल में जाए तो खोजते–खोजते फिर भारत के पास पहुंचता है। भारतीय ज्ञान–संपदा का अध्ययन करने पर ध्यान में आता है कि संस्कृति, सभ्यता, अध्यात्म के साथ–साथ अर्थविद्या, भौतिक विद्या, आयुर्वेद और गणित का विशाल ज्ञान यहीं से गया है।

- हिंदुत्व के जागरण का प्रयास स्वामी विवेकानंद, महर्षि दयानंद और अनेक महापुरुषों ने किया। संघ ने ऐसी कार्यपद्धति विकसित की जिससे सारा हिंदू समाज अपनी भाषाओं, पंथों, संप्रदायों और जातियों की विविधताओं को बनाए रखते हुए एक सूत्र में बंध जाए। उसके जीवन में यह भाव आए कि यह देश मेरा है, यह समाज मेरा है, यह धर्म–संस्कृति मेरी है।

- आज हमारी कुटुंब व्यवस्था का अध्ययन दुनिया भर के लोग कर रहे हैं। यह हमें हमारी परंपरा से मिली है। 'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्, आत्मवत् सर्वभूतेषु' जैसी जीवन शैली आज भी हिंदू समाज में दिखाई देती है। यह हमारी परंपरा का ही संस्कार है।

- इस देश के अन्न, जल और वायु से मेरा पोषण हुआ है। इस देश की समृद्धि और सुरक्षा ने हमारे पूर्वजों को जो संस्कार दिए, उन्हीं से मेरा निर्माण हुआ है। इसलिए जो कुछ मुझे मिला है, उसका श्रेय केवल मुझे नहीं, इस राष्ट्र को है। समाज, भूमि, जंगल, जल, पशु–पक्षी और जनपद इन सबके कारण मुझे यह जीवन मिला है, इसलिए मुझे वापस भी देना है।

- हमारी परंपरा ने कभी नहीं कहा कि सृष्टि को जीतो, लूटो और खसोटो। उसने कहा कि तुम भी सृष्टि के अंग हो और यह सब तुम्हारे पोषक हैं। इसलिए तुलसी भी माता है, गाय भी माता है और बहने वाली नदी भी माता है। इस कृतज्ञता के साथ जीवन जीना है और दोनों हाथों से कमाकर हजार हाथों से बाँटना है।

- ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जिनके हृदय में स्वबोध जागृत हो, जो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में उसे चरितार्थ करने का दृढ़ संकल्प रखते हों। जिनकी साधना निरंतर चलती हो और जो समाज, देश तथा राष्ट्र के लिए जीने–मरने को तैयार हों।

- हमारा देश धर्मप्राण देश है। अपने धर्म का संरक्षण करते हुए अपने राष्ट्र को परम वैभव संपन्न बनाना है। दुनिया उन्हीं की सुनती है जिनके पास शक्ति होती है। भारत को ऐसा राष्ट्र बनना है कि दुनिया उसे देखकर कहे कि जिस नींव पर भारत ने अपना निर्माण किया है, उसी नींव पर हम भी अपने देश का निर्माण करेंगे। क्योंकि वह नींव विश्वबंधुत्व की है, 'वसुधैव कुटुम्बकम् की है और सबमें एक ही तत्व देखने की दृष्टि वाली है।

पश्चिम बंगाल : सशक्त होती भारत की सीमा

संकलनकर्ता– डॉ. अनुज, सहायक प्राध्यापक (अतिथि) दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में सीमाओं की सुरक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लंबे समय से भारत को अपनी सीमाओं पर अवैध घुसपैठ, तस्करी और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता रहा है। इन चुनौतियों के पीछे भौगोलिक परिस्थितियां, कानूनी जटिलताएं तथा प्रशासनिक बाधाएं प्रमुख कारण रही हैं। कई बार राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी भी सीमा सुरक्षा को प्रभावित करती है। हालांकि अब सीमा सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

28 मई 2026 को पश्चिम बंगाल सरकार ने भारत–बांग्लादेश सीमा पर चौकियों के निर्माण और फेंसिंग कार्य को गति देने के लिए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को 142.79 एकड़ भूमि हस्तांतरित की। इसके अतिरिक्त बाढ़ नियंत्रण और अन्य आधारभूत संरचना परियोजनाओं के लिए 45 दिनों के भीतर 600 एकड़ भूमि उपलब्ध कराने की प्रक्रिया भी शुरू की गई। पश्चिम बंगाल की बांग्लादेश के साथ लगभग 2,217 किलोमीटर लंबी सीमा है, जिसमें लगभग 1,600 किलोमीटर क्षेत्र में फेंसिंग पूरी हो चुकी है, जबकि शेष हिस्से में कार्य जारी है।

31 मई 2026 को राज्यपाल आर. एन. रवि ने खुली भारत–बांग्लादेश सीमा को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौती बताया। वहीं, 7 जून 2026 को अवैध प्रवासियों द्वारा स्वयं बांग्लादेश लौटने के लिए आगे आने की खबरें सामने आईं। प्रतिदिन 200द्300 लोगों का सत्यापन किया जा रहा है, जो सीमा प्रबंधन की प्रभावशीलता को दर्शाता है।

जुलाई 2026 महत्वपूर्ण दिवस

संकलनकर्ता – डॉ. अपर्णा इड़ा श्री, सह प्राध्यापक, दीनदयाल उपाध्याय कॉजेल, दिल्ली विवि.

7 जुलाई - वैश्विक क्षमा दिवस

ग्लोबल फॉरगिवनेस डे, जिसे इंटरनेशनल फॉरगिवनेस डे भी कहा जाता है, एक अपेक्षाकृत नया उत्सव है जो वैश्विक स्तर पर क्षमा और मेल–मिलाप को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। ग्लोबल फॉरगिवनेस डे की सटीक उत्पत्ति और इतिहास अच्छी तरह से दस्तावेजीकृत नहीं है, लेकिन क्षमा की अवधारणा भारतीय संस्कृतियों और धर्मों में गहरे रूप से निहित है। यह एक ऐसा आंदोलन है जो सहानुभूति, करुणा और समझ की संस्कृति को बढ़ावा देता है। यह हमें याद दिलाता है कि क्षमा एक ताकतवर साधन है जो उपचार और व्यक्तिगत विकास में मदद करता है। यह दिन हमें अतीत की छायाओं से मुक्त होने और शांति के नए उद्देश्य से भरे भविष्य की ओर कदम बढ़ाने का अवसर देता है। इतना ही नहीं, क्षमा को अपनाकर हम अपने अतीत के बोझ से खुद को मुक्त कर सकते हैं और शांति के साथ वर्तमान की नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

10 जुलाई - वैश्विक ऊर्जा स्वतंत्रता दिवस

वैश्विक ऊर्जा स्वतंत्रता दिवस हर साल 10 जुलाई को दुनिया भर में मनाया जाता है। यह सरकारों, संगठनों और व्यक्तियों को गैर–नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता कम करने और साफ–सुथरी और अधिक लचीली ऊर्जा प्रणालियों की बात करता है। इस बात पर भी जोर देता है कि जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना और टिकाऊ ऊर्जा समाधान को बढ़ावा देना कितना जरूरी है। इसका मकसद सौर, पवन, जल, और भू–ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के फायदों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। यह दिन व्यक्तियों, समुदायों और सरकारों को साफ–सुथरी ऊर्जा प्रथाओं को अपनाकर एक टिकाऊ भविष्य की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

11 जुलाई - विश्व जनसंख्या दिवस

विश्व जनसंख्या दिवस हर साल 11 जुलाई को मनाया जाता है ताकि जनसंख्या संबंधित मुद्दों की तात्कालिकता और उसके महत्व पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। इस साल की थीम है "युवाओं को सशक्त बनाना ताकि वे एक न्यायसंगत और आशापूर्ण दुनिया में वह परिवार बना सकें जो वे चाहते हैं।" भारत में, युवा आबादी कल की कार्यबल का हिस्सा बनने जा रही है, जिसमें 35 साल से कम उम्र के लोग 65 प्रतिशत हैं। 16 जून, 2025 को, गृह मंत्रालय ने आधिकारिक रूप से जनगणना 2027 के लिए अधिसूचना जारी की। भारतीय जनगणना विभिन्न लोगों की विभिन्न विशेषताओं के बारे में जानकारी का सबसे बड़ा एकल स्रोत है। 150 से अधिक वर्षों के इतिहास के साथ, यह विश्वसनीय और स्थायी अभ्यास हर 10 साल में आबादी के डेटा में सच्चाई की झलक प्रदान करता है। 1872 में शुरु होकर, पहली जनगणना भारत के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग समय पर आयोजित की गई थी।

15 जुलाई - विश्व युवा कौशल दिवस

विश्व युवा कौशल दिवस हर साल 15 जुलाई को मनाया जाता है ताकि तकनीकी, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के महत्व और स्थानीय और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित अन्य कौशल के विकास के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके। हर साल 15 जुलाई को, विश्व युवा कौशल दिवस उन जरूरी कौशलों के महत्व को मनाता है जो काम, अच्छे रोजगार और उद्यमिता के लिए युवाओं को चाहिए होते हैं। यह दिन युवाओं, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (TVET) संस्थानों, निजी क्षेत्र, नीति निर्माताओं और विकास सहयोगियों के बीच कौशल की भूमिका पर संवाद का अवसर भी देता है, ताकि समावेशी और सतत समाज बनाने में मदद मिल सके।

–डेस्क

धर्मांतरण, फर्जी पहचान और सामाजिक सुरक्षा पर गंभीर प्रश्न

हाल के महीनों में सिर्फ उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में ही देखेंगे तो सामने आए मामलों ने धर्मांतरण, फर्जी पहचान, प्रेम संबंधों के दुरुपयोग, तथा महिलाओं की सुरक्षा को लेकर व्यापक बहस छेड़ दी है। कई घटनाओं में एक समान पैटर्न दिखाई देता है। कई मामलों में युवतियों और नाबालिगों को झूठी पहचान और षड्यंत्र के तहत प्रेमजाल में फसाना और बाद में ब्लैकमेल कर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया जाना है।

जांच एजेंसियों ने पता लगाया है कि गिरोह का नेटवर्क कई राज्यों तक फैला हुआ है और इसके षड्यंत्र में उच्च शिक्षित, सरकारी अफसर और वकील की बेटी भी इस जाल में फंस चुकी हैं वहीं मुजफ्फरनगर, मेरठ, एटा, बागपत, बिजनौर, फर्रुखाबाद और देहरादून के मामलों में आरोपी ने मजहबी पहचान छिपाकर संबंध बनाए, विवाह और निकाह के लिए दबाव डाला गया तथा विरोध करने पर मानसिक, शारीरिक अथवा कानूनी प्रताड़ना दी गई, कुछ मामलों में हत्या, दुष्कर्म, ब्लैकमेलिंग और अपहरण जैसे गंभीर घटनाएँ सामने आई हैं

दूसरी ओर पीलीभीत, रुद्रपुर, रामपुर और संभल से जुड़े मामलों में ईसाई धर्मांतरण कि घटनाएं हुई हैं। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि आर्थिक सहायता, नौकरी, विवाह या अन्य सुविधाओं का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन के लिए मैनिपुलेट किया गया था। इन मामलों में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू की है तथा कई आरोपियों को गिरफ्तार भी किया है।

इन घटनाओं की समस्या केवल धर्मांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं की सुरक्षा, फर्जी पहचान का उपयोग, सामाजिक विश्वास का दुरुपयोग, संगठित नेटवर्क की भूमिका, तथा कानून–व्यवस्था की चुनौतियां भी शामिल हैं।

हिन्दू धर्म को टारगेट करके इसाई और मुस्लिम भारत को अंदर से खोकला करने के मकसद से पूरे हिन्दू परिवार को लोभ–लालच देकर धर्म परिवर्तन करते थे, और मुस्लिम लड़के हिन्दू लडकियों को प्रेम जाल में फंसा कर उनका धर्म बदलते थे। परंतु अब एक और मिशन शुरू किया है कि हिंदू लड़कों को शादी और नौकरी, व्यापार के साथ ब्रेनवॉश करना, फिर उनका धर्मांतरण कराना।

उत्तर प्रदेश में धर्मांतरण के मामलों पर बढ़ी सक्रियता

उत्तर प्रदेश में हाल के दिनों में धर्मांतरण से जुड़े कई मामलों ने सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर चर्चा को तेज कर दिया है। बिजनौर के बाखपुर गढ़ी गांव में नाबालिग विशाल के कथित धर्म परिवर्तन का मामला सामने आया, जिसमें परिजनों ने आरोप लगाया कि उसे शादी का लालच देकर कश्मीर ले जाया गया और उसका नाम हमजा रखा गया। पुलिस ने विशाल को बरामद कर परिजनों को सौंप दिया, जबकि आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। बाद में गांव के मंदिर में वैदिक रीति से उसका शुद्धिकरण और घर वापसी कार्यक्रम आयोजित किया गया।

बरेली में 22 वर्षीय मैजबीन ने अपने बचपन के मित्र विशाल से विवाह करने के लिए सनातन धर्म अपनाकर अपना नाम लक्ष्मी रख लिया। परिवारों की असहमति के बाद दोनों बरेली पहुंचे और जिलाधिकारी के समक्ष धर्म परिवर्तन का आवेदन दिया। अगस्त्य मुनि आश्रम में शुद्धिकरण संस्कार के बाद हिंदू रीति–रिवाज से विवाह संपन्न हुआ। लक्ष्मी ने कहा कि उन्होंने यह निर्णय अपनी इच्छा और हिंदू धर्म में आस्था के आधार पर लिया है।

शामली के आयुष मलिक प्रकरण में एक युवक द्वारा धर्म परिवर्तन कर इस्लाम अपनाया है और अब स्वयं को मोहम्मद अली बताते हैं। 12 वर्ष पहले चांदनी नामक युवती से मिला, फिर इस्लाम धर्म स्वीकार किया और बाद में इस्लामिक रीति–रिवाज से निकाह किया। घर वालों को पता चला तो फिर घर वापसी की बात बढ़ी, फिर हिन्दू सामाजिक संगठनों की सक्रियता बढ़ी है। मेरठ में आयोजित एक कार्यक्रम में स्वामी यशवीर महाराज ने दावा किया कि आयुष के संपर्क में समाज के लोग लगातार बने हुए हैं और उनकी घर वापसी के प्रयास जारी हैं।

आईएमए से पहली बार नौ महिला अफसर बनीं लेफ्टिनेंट, सेना को मिले 481 नए अधिकारी

–डेस्क

देहरादून स्थित भारतीय सैन्य अकादमी (आईएमए) के इतिहास में शनिवार का दिन स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया। पहली बार अकादमी से प्रशिक्षण पूरा कर नौ महिला कैडेट भारतीय सेना में अधिकारी के रूप में शामिल हुईं। पासिंग आउट परेड के साथ उन्होंने लेफ्टिनेंट का पद प्राप्त कर सैन्य जीवन की नई शुरुआत की। यह उपलब्धि न केवल भारतीय सेना बल्कि देश में महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

इस ऐतिहासिक समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि सैन्य वर्दी में नारी शक्ति का बढ़ता प्रतिनिधित्व प्रगतिशील भारत का प्रतीक है। उन्होंने इसे महिला नेतृत्व वाले विकास की दिशा में एक प्रेरणादायक उपलब्धि बताया।

परेड में कुल 515 कैडेट पास आउट हुए, जिनमें 481 भारतीय और 34 विदेशी कैडेट शामिल रहे। प्रशिक्षण के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पटना के कैडेट विशाल कुमार को प्रतिष्ठित स्वार्ड ऑफ ऑनर और गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति ने नव नियुक्त अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि नेतृत्व केवल आदेश देने तक सीमित नहीं होता, बल्कि चरित्र, करुणा और पूर्ण समर्पण का परिचायक है। उन्होंने अधिकारियों को देश सेवा को सर्वोच्च कर्तव्य मानने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त), मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, सेना प्रशिक्षण कोर के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल देवेंद्र शर्मा तथा कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

खोड़ा का सूर्या चौहान हत्याकांड एक घटना जिसने प्रदेश को झकझोर दिया

गाजियाबाद के खोड़ा क्षेत्र में 28 मई 2026 को 17 वर्षीय सूर्या प्रताप चौहान की हत्या ने पूरे उत्तर प्रदेश को झकझोर दिया आरोप है कि पड़ोस के कुछ मुस्लिम युवकों ने सूर्या को बकरईद पर बकरे की कुर्बानी देखने की जिद की। जब सूर्या ने देखने से मना किया तो सूर्या पर चाकू से हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल सूर्या ने जान बचाने की कोशिश की, लेकिन उसकी मृत्यु हो गई।

घटना के बाद क्षेत्र में भारी आक्रोश फैल गया बड़ी संख्या में लोगों ने न्याय की मांग को लेकर प्रदर्शन किए। विभिन्न हिंदू संगठनों के नेता भी मौके पर पहुंचे और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। प्रशासन ने अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर मामले की जांच शुरू कर दी। मुख्य आरोपी असद पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था, जिसकी बाद में पुलिस मुठभेड़ में मौत हो गई। अन्य आरोपियों के खिलाफ भी कानूनी कार्रवाई जारी है।

इस घटना ने मुस्लिम युवाओं में बढ़ती हिंसा की प्रवृति तथा सामाजिक सद्भाव पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। हिन्दू पक्ष के लोगों का मानना है कि ऐसे मामलों के आरोपियों को त्वरित कड़ी से कड़ी सजा दी जाए ताकि भविष्य में ऐसी जघन्य घटनाओं की पुनर्रावृति न हो सके। स्थानीय लोगों की मांग पर सूर्या की स्मृति में प्रशासन द्वारा घटनास्थल को सूर्याचौक का नाम दिया गया है।

महत्वपूर्ण धार्मिक एवं पुरातात्विक स्थल : हस्तिनापुर

- अशोक सिन्हा, उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

हस्तिनापुर उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में स्थित गंगा नदी के किनारे बसा एक प्राचीन नगर है। इसका उल्लेख रामायण के साथ-साथ मौर्य साम्राज्य से संबंधित प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। हिन्दू प्राचीन ग्रंथ यह बताते हैं कि हस्तिनापुर महाराज हस्ती की बसाई गई प्राचीन नगरी है। इसे महाभारत में कुरु राज्य की राजधानी माना गया है, जहाँ कौरव और पांडवों के जीवन काल की अनेक घटनाएं घटित हुईं। महाभारत के अनुसार यह धृतराष्ट्र, भीष्म, दुर्योधन और पांडवों का प्रमुख राजनैतिक केंद्र था। आधुनिक हस्तिनापुर मेरठ के निकट स्थित है और एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं पुरातात्विक स्थल माना जाता है। यहां की खुदाइयों में प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं, जिनसे इस क्षेत्र की प्राचीनता का पता चलता है। यह जैन धर्म का भी महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है; यहां कई प्रसिद्ध जैन मंदिर स्थित हैं। पांडेश्वर महादेव मंदिर, द्रौपदी घाट, कर्ण घाट, विदुर टीला, जम्बूद्वीप जैन तीर्थ, सिक्ख गुरुद्वारा आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं।

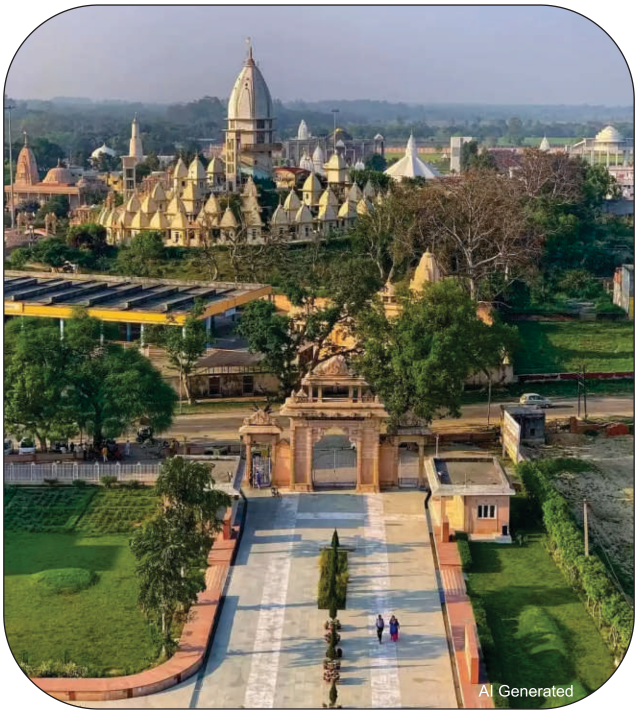

हस्तिनापुर हिंदू, जैन और सिक्ख धर्म की समागम स्थली है। आध्यात्मिक पर्यटकों के लिए यह एक पवित्र तीर्थ है। महाभारत का युद्ध भी हस्तिनापुर के सिंहासन के लिए हुआ था जिसमें पांडवों को विजय प्राप्त हुई थी। कहा जाता है कि कौरवों की पराजय के बाद उत्तराधिकारी के रूप में पांडवों ने यहां 35 वर्षों से अधिक समय तक राज किया था। प्रतापी भरत भी यहां के राजा रहें हैं जिनके नाम पर इस महान देश का नाम भारत पड़ा। यहां ऐतिहासिक एवं पौराणिक धरोहर, सरंचनाएं, चट्टानी शिलालेख आदि महाभारतकालीन हैं। कूप, रघुनाथ महल, प्राचीन जयन्ती माता मंदिर, शक्तिपीठ मंदिर, प्राचीन पांडेश्वर मंदिर, गांधारी तालाब आदि हिंदुओं के आस्था के केंद्र हैं। ऐसी मान्यता है कि पांडवों द्वारा द्रौपदी को जुए में हारने के कारण चीर हरण के समय द्रौपदी ने हस्तिनापुर को यह श्राप दिया था कि जहां नारी का सम्मान नहीं होता वह क्षेत्र बरबादी का कारण बनता है। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां के विकास का बीड़ा उठाया है। यहां के विकास के लिए केंद्र सरकार की भी योजनाएं चलाई जा रही है। योगी जी का यहां ड्रीम प्रोजेक्ट भी साकार रूप ले रहा है। इस प्रकार सरकार पर्यटन के साथ-साथ आध्यात्मिक तीर्थ नगरी के रूप में इसे हिंदुओं की आस्था के केंद्र के रूप में विकसित करना चाहती है।

उत्तर भारत में हस्तिनापुर जैन धर्मावलंबियों का भी पवित्र तीर्थ स्थल है। वास्तुकला के विभिन्न अद्भुत उदाहरण एवं जैन धर्म के विभिन्न मान्यताओं के केंद्र यहां उपलब्ध हैं। जम्बू द्वीप जैन मंदिर, श्वेताम्बर जैन मन्दिर, प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर, अष्टपद जैन मंदिर एवं श्री कैलाश पर्वत जैन मंदिर यहां तीर्थयात्रियों के आकर्षण के केंद्र हैं। श्वेताम्बर जैन मंदिर में एक भव्य पाराना या उपवास तोड़नें वाला हाल है, जिसकी मान्यता है कि इस मंदिर में प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान श्री आदिनाथ ने श्रेयांशकुमार के हांथों से गन्ने का रस पीकर अपना तेरह माह पुराना उपवास तोड़ा था। इस मंदिर में हर वर्ष अक्षय तृतीया को श्रद्धालु अपना उपवास तोड़ते हैं जिसे बरसी कहा जाता है। हस्तिनापुर सिक्ख समुदाय के लिए भी बड़ी मान्यता का केंद्र है क्यों कि गुरु गोविंदसिंह जी के पांच शिष्यों में से एक प्यारे भाई धरम सिंह जी का यह जन्म स्थान है। सिक्खों के लिए सैफपुर, करमंचन पुर गुरुद्वारा श्रद्धालुओं के लिए एक बड़ा तीर्थ केंद्र है। हस्तिनापुर नेशनल पार्क को जैविक पार्क के रूप में विकसित किया गया है। यह अभयारण्य 2073 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है जो गंगानदी के किनारे पर स्थित है। सरकार द्वारा हस्तिनापुर का कायाकल्प करना इसके प्राचीन महत्व, प्रमुख तीर्थ स्थल व इसकी दिव्यता-भव्यता को भी संरक्षित करने का प्रयास है।

राष्ट्र निर्माण में सामाजिक समरसता : युवा विचार

संकलनकर्ता – डॉ. दीपा रानी (सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है, जहां विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं के लोग एक साथ निवास करते हैं। ऐसे बहुलतावादी समाज में सामाजिक समरसता राष्ट्रीय एकता की आधारशिला है। हमारी सनातन संस्कृति हमें प्रत्येक मानव में ईश्वर का स्वरूप देखने तथा सभी के प्रति सम्मान, प्रेम और करुणा का भाव रखने की प्रेरणा देती है। सामाजिक समरसता केवल सौहार्दपूर्ण सह–अस्तित्व का माध्यम नहीं है, बल्कि राष्ट्र और समाज के सतत् विकास तथा प्रगति की अनिवार्य शर्त भी है।

विशेष रूप से भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश (Demographic Dividend) को सार्थक दिशा प्रदान करने में सामाजिक समरसता की महत्वपूर्ण भूमिका है। जब समाज में समान अवसर, पारस्परिक विश्वास और भाईचारे की भावना सुदृढ़ होती है, तब युवाशक्ति अपनी पूर्ण क्षमता के साथ राष्ट्र–निर्माण में योगदान दे सकती है। साथ ही, सामाजिक समरसता सामाजिक न्याय, समानता और समावेशिता को बढ़ावा देती है, जिससे समाज का प्रत्येक वर्ग विकास की मुख्यधारा से जुड़कर राष्ट्र की प्रगति में सहभागी बनता है। मेरे विचार में सामाजिक समरसता एक ऐसा सशक्त सेतु है, जो विविधताओं को विभाजन का नहीं, बल्कि शक्ति का आधार बनाती है। यही भावना भारत को अधिक समृद्ध, सशक्त, समावेशी और एकात्म राष्ट्र बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

– शुभांगी क्षितिजा सौरव, दिल्ली विश्वविद्यालय

सामाजिक समरसता का अर्थ है समाज के सभी वर्गों के बीच जाति, धर्म, लिंग अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त कर समानता, प्रेम, सहयोग और भाईचारे की भावना स्थापित करना। "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।" अर्थात सत्य एक है, किंतु विद्वान उसे विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। भारतीय मनीषियों द्वारा प्रतिपादित सामाजिक एकता का यह दर्शन ही भारतीय संस्कृति की विशिष्टता और उसका प्राण है।

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्।।"

भगवद्गीता का यह श्लोक बताता है कि समाज में विभाजन जन्म के आधार पर नहीं, बल्कि गुण और कर्म के आधार पर होना चाहिए। सामाजिक समरसता समाज में व्याप्त तनाव और वैमनस्य को कम करके शांति एवं सद्भाव का वातावरण निर्मित करती है। जब समाज के सभी वर्ग परस्पर सहयोग और विश्वास के साथ कार्य करते हैं, तब राष्ट्र और समाज तीव्र गति से प्रगति करते हैं। यह लोगों में स्वार्थ की भावना को कम कर करुणा, दया, सहिष्णुता और मानवता जैसे गुणों का विकास करती है। सामाजिक समरसता विभिन्न समुदायों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ बनाती है। अतः सामाजिक समरसता एक सशक्त, समृद्ध और शांतिपूर्ण समाज के निर्माण की आधारशिला है। हमें जाति, धर्म और वर्ग के संकीर्ण भेदों से ऊपर उठकर समानता, बंधुत्व और मानवता के मूल्यों को अपनाना चाहिए, तभी एक आदर्श राष्ट्र की स्थापना संभव हो सकेगी।

– दीपक दिवाकर, दिल्ली विश्वविद्यालय

हमारे प्राचीन ग्रंथों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का जो संदेश दिया गया है, वह सामाजिक समरसता की ही आत्मा है। एक सशक्त और प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण के लिए सामाजिक समरसता का होना अत्यंत आवश्यक है। जब समाज का प्रत्येक वर्ग स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करता है, तब देश में राष्ट्रीय एकता की भावना सुदृढ़ होती है। आपसी भेदभाव समाप्त होने से दंगों, जातीय हिंसा और आंतरिक संघर्षों पर अंकुश लगता है, जिससे देश में शांति और सौहार्द का वातावरण बनता है। जब नागरिक आपस में संघर्ष करने के बजाय मिल–जुलकर कार्य करते हैं, तो देश का आर्थिक और औद्योगिक विकास भी तीव्र गति से होता है।

भारतीय इतिहास में सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए समय–समय पर अनेक प्रयास किए गए हैं। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर छुआछूत के विरुद्ध आंदोलन चलाया। वहीं, भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारतीय संविधान के माध्यम से प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार प्रदान कर सामाजिक समरसता की कानूनी नींव रखी। भारत में प्रतिवर्ष 6 दिसंबर को डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर "सामाजिक समरसता दिवस" मनाया जाता है, जो सामाजिक न्याय, समानता और बंधुत्व के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

–आशीष कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय

संकलनकर्ता – डॉ. नीलम कुमारी

पर्यावरण संरक्षण और 'एक पेड़ मां के नाम'

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर प्रदेश के सभी विभागीय कार्यालयों, अटल आवासीय विद्यालयों और ईएसआई अस्पतालों में वृहद स्तर पर पौधरोपण किया गया। राज्य सरकार ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत पर्यावरण संवर्धन का संदेश दिया और परिसरों को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए विशेष ड्राइव चलाया गया।

बाल श्रम उन्मूलन विशेष अभियान

बाल श्रम को जड़ से समाप्त करने के लिए 12 जून से विशेष जागरूकता अभियानों की शुरुआत की गई है. श्रम विभाग द्वारा प्रदेश के 15 जिलों के 140 हॉटस्पॉट को बाल श्रम मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है. इस दौरान श्रमिक पंजीयन शिविर, रैलियां और बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने वाले संकल्प सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं।

'प्रोजेक्ट गंगा' का शुभारंभ (ग्रामीण डिजिटल क्रांति)

ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए 'प्रोजेक्ट गंगा' का शुभारंभ किया गया है। इसके तहत अगले 3 वर्षों में गांवों तक हाई–स्पीड इंटरनेट ब्रॉडबैंड पहुंचाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, 8,000 डिजिटल एंटरप्रेन्योर तैयार किए जा रहे हैं जिनमें 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी होगी।

जनकल्याण और महा-जनसंपर्क अभियान

केंद्र की एनडीए सरकार के 12 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में, 5 जून से 21 जून तक पूरे प्रदेश में 'जनकल्याण एवं जन–जागरूकता अभियान' चलाया जा रहा है. इसके अंतर्गत राज्य में विकास प्रदर्शनी, जनकल्याण शिविर, प्रगति पथ यात्रा, और स्वास्थ्य मेलों का आयोजन करके सरकारी योजनाओं को घर–घर तक पहुंचाया जा रहा।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत मंगल पाण्डेय

मंगल पाण्डेय भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभिक वीर सेनानियों में गिने जाते हैं। उनका जन्म 19 जुलाई 1827 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के नगवा गांव में हुआ था। वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री में सैनिक थे। भारतीय इतिहास में उनका नाम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी के रूप में अमर है।

सन् 1857 में अंग्रेजी सेना में नई एनफील्ड राइफल के कारतूसों को लेकर व्यापक असंतोष फैल गया। यह माना गया कि कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है, जिससे भारतीय सैनिकों की धार्मिक भावनाएं आहत होने के कारण 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी में मंगल पाण्डेय ने अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उनके इस साहसिक कदम ने पूरे देश में स्वतंत्रता की भावना को प्रज्वलित कर दिया, जो आगे चलकर 1857 के व्यापक विद्रोह के रूप में परिणित हुआ।

ब्रिटिश शासन ने उन्हें गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी। यद्यपि उनका जीवन अल्पकालिक रहा, फिर भी उनका अविस्मरणीय बलिदान भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की प्रेरणा बन गया। मंगल पाण्डेय का नाम आज भी राष्ट्रभक्ति, साहस और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के प्रतीक के रूप में सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उनका योगदान भारतीय इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में सदैव अमर रहेगा।

अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में चंद्रशेखर आजाद का नाम अदम्य साहस, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के प्रतीक के रूप में लिया जाता है। उनका जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के भाबरा (वर्तमान अलीराजपुर) में हुआ था। उनके पिता पंडित सीताराम तिवारी और माता जगरानी देवी थीं। बाल्यकाल से ही उनमें देशभक्ति की भावना प्रबल थी।

सन् 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। न्यायालय में उन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतंत्रता और निवास जेल बताया, क्रोधित मजिस्ट्रेट ने उन्हें 15 कोड़े मारने की सजा सुनाई, उस समय उनकी आयु मात्र 15 वर्ष ही थी तभी से वे चंद्रशेखर आजाद के नाम से प्रसिद्ध हो गए। बाद में उन्होंने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा दी। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया।

27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेज पुलिस ने उन्हें घेर लिया। वीरतापूर्वक मुकाबला करते हुए उन्होंने अंतिम गोली स्वयं पर चलाकर अपनी प्रतिज्ञा निभाई कि वे कभी अंग्रेजों के हाथ जीवित नहीं पकड़े जाएंगे।

चंद्रशेखर आजाद का जीवन त्याग, बलिदान और राष्ट्रसमर्पण की प्रेरक गाथा है। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूतों में सदैव स्मरणीय रहेगा।

भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत बाल गंगाधर तिलक

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में हुआ था। वे महान राष्ट्रवादी, शिक्षाविद, समाज सुधारक और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता थे। उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जनजागरण का अग्रदूत माना जाता है। उनका प्रसिद्ध नारा "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा" आज भी देशभक्ति की प्रेरणा देता है।

तिलक ने सरकारी नौकरी छोड़कर राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना। सन् 1880 में न्यू इंग्लिश स्कूल तथा बाद में दक्कन एजुकेशन सोसायटी और फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जनजागरण के लिए उन्होंने केसरी (मराठी) और मराठा (अंग्रेजी) समाचार पत्र शुरू किए।

लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल के साथ वे लाल–बाल–पाल की प्रसिद्ध त्रयी के सदस्य थे, उन्होंने स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा और स्वराज का चार सूत्रीय कार्यक्रम दिया। राजद्रोह के आरोप में उन्हें 1908 में मांडले जेल भेजा गया, जहां उन्होंने प्रसिद्ध ग्रंथ गीता रहस्य की रचना की। महात्मा गांधी ने उन्हें जनमानस का सच्चा नेता और महान देशभक्त बताया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

दुर्गाबाई देशमुख : महिला सशक्तिकरण और समाज सेवा की अग्रदूत

–डेस्क

दुर्गाबाई देखमुख भारत की प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, शिक्षाविद और विधिवेत्ता थीं। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के साथ–साथ महिलाओं की शिक्षा, सामाजिक कल्याण और राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया उन्हें भारतीय सामाजिक कार्य की जननी तथा आयरन लेडी ऑफ इंडिया के रूप में भी सम्मानित किया जाता है।

आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में जन्मी दुर्गाबाई देशमुख महात्मा गांधी के विचारों से अत्यंत प्रभावित थीं। मात्र 12 वर्ष की आयु में उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया और बाद में नमक सत्याग्रह के दौरान महिलाओं का नेतृत्व किया स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण उन्हें 1930 से 1933 के बीच कई बार जेल जाना पड़ा। जेल में भी उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने का कार्य जारी रखा।

वर्ष 1937 में उन्होंने आंध्र महिला सभा की स्थापना की, जो महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास के लिए समर्पित एक प्रमुख संस्था बनी। वे भारतीय संविधान सभा की सदस्य रहीं और संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों, न्यायपालिका की स्वतंत्रता और शिक्षा के विस्तार का दृढ़ता से समर्थन किया।

दुर्गाबाई देशमुख
(15 जुलाई 1909 – 9 मई 1981)

दुर्गाबाई देशमुख केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की प्रथम अध्यक्ष भी रहीं। उनके प्रयासों से देशभर में महिला एवं बाल कल्याण कार्यक्रमों को नई दिशा मिली। सामाजिक सेवा और राष्ट्र निर्माण में उनके असाधारण योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 1975 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

दुर्गाबाई देशमुख का जीवन त्याग, सेवा और महिला सशक्तिकरण का प्रेरक उदाहरण है। आज भी उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल : आजाद हिंद फौज की वीरांगना

कैप्टन लक्ष्मी सहगल
(24 अक्टूबर 1914 – 23 जुलाई 2012)

कैप्टन लक्ष्मी सहगल भारत की प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, चिकित्सक और समाजसेवी थीं। उनका जन्म मद्रास (वर्तमान चेन्नई) में हुआ था। उनके पिता एस. स्वामीनाथन प्रतिष्ठित वकील और माता अम्मू स्वामीनाथन स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी सामाजिक कार्यकर्ता थीं। बचपन से ही उनमें देशभक्ति और समाज सेवा की भावना थी।

उन्होंने मद्रास मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा शिक्षा प्राप्त की और डॉक्टर बनीं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वे सिंगापुर गईं, जहां उनकी मुलाकात नेताजी सुभाष चंद्र बोस से हुई। नेताजी के आह्वान पर उन्होंने आज़ाद हिंद फौज में शामिल होकर महिलाओं की रानी झांसी रेजिमेंट का नेतृत्व संभाला इसी कारण उन्हें कैप्टन लक्ष्मी के नाम से प्रसिद्धि मिली। उन्होंने कानपुर में चिकित्सक के रूप में गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा की वे महिलाओं के अधिकार, सामाजिक न्याय और जनसेवा के कार्यों से जीवनभर जुड़ी रहीं वर्ष 1998 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

23 जुलाई 2012 को उनका निधन हो गया। कैप्टन लक्ष्मी सहगल का जीवन साहस, राष्ट्रभक्ति, महिला सशक्तिकरण, मानव सेवा और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

खेल प्रेमियों के लिए बड़ी सौगात

अब दूरदर्शन-आकाशवाणी पर दिखेंगे अधिक राष्ट्रीय महत्व के मुकाबले

संकलनकर्ता– कुमारी श्रेयांशी, शोधार्थी

केंद्र सरकार ने खेल प्रेमियों के लिए एक बड़ा फैसला लिया है। सरकार ने स्पोर्ट्स ब्रॉडकास्टिंग सिग्नल्स (प्रसार भारती के साथ अनिवार्य साझाकरण) अधिनियम, 2007 के तहत 'राष्ट्रीय महत्व के खेल आयोजनों' की सूची का काफी विस्तार कर दिया है। इसके बाद अब कई और अंतरराष्ट्रीय और घरेलू खेल प्रतियोगितियों के लाइव प्रसारण सिग्नल प्रसार भारती के साथ साझा करना अनिवार्य होगा।

दूरदर्शन और आकाशवाणी पर बढ़ेगी खेलों की पहुंच : सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने 11 जून को जारी एक राजपत्र (गजट) अधिसूचना के जरिए मई 2022 के पुराने आदेश को निरस्त कर दिया है। नए आदेश के तहत उन खेल आयोजनों की सूची को संशोधित किया गया है, जिनके लाइव प्रसारण सिग्नल सार्वजनिक प्रसारक प्रसार भारती के साथ साझा करना जरूरी होगा।

2007 के कानून के अनुसार, जिन प्रसारकों के पास किसी अधिसूचित खेल आयोजन के विशेष प्रसारण अधिकार (एक्सक्लूसिव मीडिया राइट्स) होते हैं, उन्हें उसके लाइव सिग्नल प्रसार भारती को उपलब्ध कराने होते हैं। इससे आम दर्शक दूरदर्शन और आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) के माध्यम से इन मुकाबलों का आनंद ले सकते हैं।

15 वर्ष की उम्र में तिरंगे का मान बढ़ाने निकले वैभव सूर्यवंशी

भारतीय क्रिकेट का नया स्वर्णिम अध्याय

खेल–जगत की सबसे प्रेरक और चर्चित उपलब्धि बिहार के 15 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी का भारतीय टी–20 टीम में चयन है। अपनी प्रतिभा, निर्भीक बल्लेबाजी और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन के बल पर वैभव ने राष्ट्रीय टीम तक पहुँचकर भारतीय क्रिकेट में एक नया इतिहास रच दिया है।वैभव सूर्यवंशी को आयरलैंड और इंग्लैंड के विरुद्ध आगामी टी–20 श्रृंखलाओं के लिए भारतीय टीम में स्थान मिला है। यदि वे मैदान पर उतरते हैं, तो वे भारत की पुरुष सीनियर टीम के सबसे कम उम्र के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर बन सकते हैं और सचिन तेंदुलकर के सबसे कम आयु में पदार्पण के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देंगे। यह चयन केवल एक युवा खिलाड़ी की व्यक्तिगत सफलता नहीं है, बल्कि भारत के उभरते खेल–संस्कार, छोटे शहरों की प्रतिभा और युवाओं के अटूट आत्मविश्वास का प्रतीक है। बिहार की धरती से निकला यह बाल प्रतिभावान अब करोड़ों युवाओं के लिए संदेश बन गया है कि आयु नहीं, बल्कि लगन, अनुशासन और निरंतर परिश्रम ही सफलता की वास्तविक पहचान हैं।

आईपीएल और युवा क्रिकेट में अपने आक्रामक प्रदर्शन से प्रभावित करने वाले वैभव ने यह सिद्ध किया है कि अवसर मिलने पर भारत का युवा वर्ग विश्व मंच पर अपनी अलग पहचान बना सकता है। भारतीय टी–20 टीम में उनका चयन देश के क्रिकेट भविष्य के लिए आशा, उत्साह और नई संभावनाओं का उज्ज्वल संकेत है। 'वैभव सूर्यवंशी की यह ऐतिहासिक उपलब्धि केवल रिकॉर्ड बनाने की कहानी नहीं, बल्कि उस नए भारत की कहानी है जहाँ प्रतिभा को उम्र की सीमा नहीं रोकती और सपनों को मेहनत पंख देती है।'

आयुर्वेद - चिकित्सा

स्वस्थ, संतुलित एवं अनुशासित जीवन की समग्र जीवनशैली

नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

आयुर्वेद एक प्राचीन चिकित्सा विज्ञान है जो 5000 वर्षों से भी अधिक समय से भारत में प्रचलित है। आयुर्वेद शब्द संस्कृत के आयुर (जीवन) और वेद (ज्ञान) से मिलकर बना है। यह प्राचीन चिकित्सा विज्ञान न केवल व्याधियों (रोगों) का निदान करता है बल्कि एक समग्र (Holistic) दृष्टिकोण के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित रखकर दीर्घायु प्राप्त करने में मदद करता है। आजकल आयुर्वेद को योग सहित अन्य पारंपरिक प्रथाओं के साथ एकीकृत किया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसके महत्व को समझते हुए सन् 1976 से ही आयुर्वेद चिकित्सा को मान्यता दे रखी है। आयुर्वेद हमें हजारों वर्षों से स्वस्थ जीवन की दिशा दिखा रहा है। प्राचीन भारत में आयुर्वेद को रोगों के उपचार और स्वस्थ जीवन शैली का सर्वोत्तम माध्यम माना जाता था। आजकल की भाग–दौड़ भरी तेज जीवन शैली में हमें अपने शरीर और मन का ध्यान रखने के लिए आयुर्वेदिक तरीकों की आवश्यकता है। इससे हम न केवल रोगों को दूर रख सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ और संतुलित जीवन भी जी सकते हैं।

त्रिदोष का सिद्धांत : आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर पंच महाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से बना है। इन्हीं से शरीर में तीन दोष (ऊर्जा) बनते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य इन तीनों दोषों के संतुलन पर निर्भर करता है।

- ♦ **वात** : गति और तंत्रिका तंत्र को नियंत्रित करता है।
- ♦ **पित्त** : चयापचय (मेटाबॉलिज्म) और पाचन तंत्र का प्रबंधन करता है।
- ♦ **कफ** : शरीर की संरचना और स्थिरता बनाए रखता है।

आयुर्वेद का महत्वपूर्ण उद्देश्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना। रोगी का उपचार करना। रोग होने से पहले उसकी रोकथाम करना। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखना। प्राकृतिक और संतुलित जीवनशैली अपनाना।

आयुर्वेद में उपचार के प्रमुख प्रकार हैं–

- ◘ **औषधि चिकित्सा :** जड़ी–बूटियों और प्राकृतिक दवाओं से उपचार।
- ◘ **पंचकर्म :** शरीर की शुद्धि के लिए विशेष चिकित्सा।
- ◘ **आहार चिकित्सा :** संतुलित एवं दोषानुसार भोजन।
- ◘ **रसायन चिकित्सा :** रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं दीर्घायु के लिए उपयोगी।
- ◘ **विहार चिकित्सा** : दिनचर्या, व्यायाम, योग और पर्याप्त नींद।

मनुष्य यदि अपने जीवन में आयुर्वेद अपनाते हैं तो सभी बीमारियों से मुक्ति मिलने के साथ–साथ पाचन शक्ति बेहतर होती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। तनाव और चिंता कम होती है। नींद की गुणवत्ता सुधरती है। जीवनशैली संतुलित होती है। दीर्घकालिक रोगों के प्रबंधन में सहायता मिलती है तथा शरीर और मन में संतुलन बना रहता है।

प्रमुख लाभकारी व उपयोगी आयुर्वेदिक औषधियाँ -

- ☞ **अश्वगंधा** : शक्ति, तनाव नियंत्रण, ऊर्जा संवर्धन में सहायक।
- ☞ **तुलसी** : सर्दी, खांसी, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि।
- ☞ **गिलाए** : प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करना ,प्रतिरक्षा व बुखार में सहायक।
- ☞ **आंवला** : विटामिन सी का मुख्य श्रोत, पाचन, प्रतिरक्षा में सहायक।
- ☞ **हल्दी** : सूजन कम करने में सहायक, घाव भरने में उपयोगी तथा प्रतिरोधक क्षमता बर्धक।
- ☞ **नीम** : त्वचा रोगों में उपयोगी और दंत स्वास्थ्य में उपयोगी।
- ☞ **एलोविरा** : त्वचा में निखार लाने में सहायक और पाचन में उपयोगी।
- ☞ **त्रिफला** : पेट सम्बन्धी रोग, पाचन और कब्ज में सहायक।
- ☞ **शतावरी** : महिलाओं के स्वास्थ्य में सहायक व उपयोगी।
- ☞ **ब्राह्मी** : स्मरण शक्ति और मानसिक एकाग्रता में सहायक।

आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि स्वस्थ, संतुलित और अनुशासित जीवन जीने की समग्र जीवनशैली है। इसका मूल उद्देश्य रोगों का उपचार करने के साथ–साथ उन्हें होने से रोकना, शरीर–मन–आत्मा का संतुलन बनाए रखना और दीर्घकाल तक स्वस्थ जीवन प्रदान करना है। उचित आहार, नियमित दिनचर्या, योग, ध्यान और चिकित्सकीय सलाह के साथ आयुर्वेद जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

डेयरी व्यवसाय से लिखी सफलता की कहानी

–डेस्क

लखीमपुर खीरी के ग्राम देवरिया निवासी रामलखन ने मेहनत और सरकारी योजना का लाभ उठाकर आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। कभी संसाधनों और पूंजी की कमी से जूझ रहे रामलखन ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत वर्ष 2024 में 10 लाख रुपये का ऋण प्राप्त किया और डेयरी व्यवसाय शुरू किया। आज उनकी डेयरी से प्रतिदिन 5 से 8 क्विंटल दूध का उत्पादन हो रहा है। इस व्यवसाय से उन्हें खर्च निकालने के बाद हर महीने करीब 15 से 30 हजार रुपये की शुद्ध आय हो रही है। रामलखन ने न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत की, बल्कि गांव के तीन अन्य लोगों को भी रोजगार दिया। उनकी सफलता दिखाती है कि सही अवसर और मेहनत से ग्रामीण युवा आत्मनिर्भर बनकर दूसरों के लिए रोजगार का माध्यम बन सकते हैं।

जूट प्रशिक्षण से चंपावत की महिलाएं बनेंगी आत्मनिर्भर

चंपावत में ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए एसबीआई ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) ने 14 दिवसीय जूट उत्पाद निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को जूट के बैग, सजावटी सामान और घरेलू उपयोग की वस्तुएं बनाने की कला सिखाई गयी।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के सशक्त उत्तराखंड और आदर्श चंपावत के विजन के तहत शुरू किए गए इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर बढ़ाना है। प्रशिक्षण पूरी तरह निशुल्क है, जिसमें महिलाओं को उत्पाद निर्माण के साथ–साथ मार्केटिंग, बैंकिंग और सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी जा रही है। जूट उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण बाजार में उनकी मांग तेजी से बढ़ रही है। यह पहल महिलाओं को अपने पैरों पर खड़ा करने के साथ–साथ प्लास्टिक के विकल्प को बढ़ावा देने में भी मददगार साबित होगी।

चौलाई के लड्डुओं से बदली मुरादाबाद की महिलाओं की जिंदगी, बनीं आत्मनिर्भर

मुरादाबाद की महिलाओं ने मेहनत और हुनर के दम पर आत्मनिर्भरता की नई कहानी लिखी है। 'मां शारदा स्वयं सहायता समूह' से जुड़ी 10 महिलाएं चौलाई के स्वादिष्ट लड्डू बनाकर अच्छा मुनाफा कमा रही हैं। कभी घर की जिम्मेदारियों तक सीमित रहने वाली ये महिलाएं अब अपना कारोबार संभाल रही हैं।

समूह की महिलाएं चौलाई को साफ करने, भूनने, गुड़ मिलाकर लड्डू तैयार करने और उनकी पैकिंग तक का पूरा काम खुद करती हैं। शुद्धता और बेहतर स्वाद के कारण इन लड्डुओं की मांग मुरादाबाद के साथ आसपास के क्षेत्रों में भी बढ़ रही है।

समूह की अध्यक्षा रजनी बताती हैं कि ग्राहकों से मिलने वाले ऑर्डर से कारोबार लगातार आगे बढ़ रहा है। आज समूह की प्रत्येक महिला हर महीने करीब 12 से 15 हजार रुपये तक की कमाई कर रही है। यह पहल न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बना रही है, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी रोजगार के नए अवसर तैयार कर रही है।

संपादन की कला और शिल्प का प्रामाणिक दस्तावेज ‘संपादन-कला : सिद्धांत से व्यवहार तक’

– डॉ. अनिल कुमार निगम, वरिष्ठ पत्रकार

पत्रकारिता के क्षेत्र में लेखन जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण संपादन भी है। वास्तव में, एक उत्कृष्ट संपादक ही किसी सामान्य सामग्री को प्रभावशाली, पठनीय और विश्वसनीय बनाता है। इसी दृष्टि से वरिष्ठ मीडिया शिक्षाविद् प्रो.अरुण भगत द्वारा लिखित पुस्तक ‘संपादन-कला : सिद्धांत से व्यवहार तक’ पत्रकारिता और जनसंचार के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा मीडिया पेशेवरों के लिए एक महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में सामने आई है। वाणी प्रकाशन से प्रकाशित 160 पृष्ठों की यह पुस्तक न केवल संपादन की बारीकियों को समझाती है, बल्कि उसके व्यावहारिक पक्षों को भी सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत करती है।

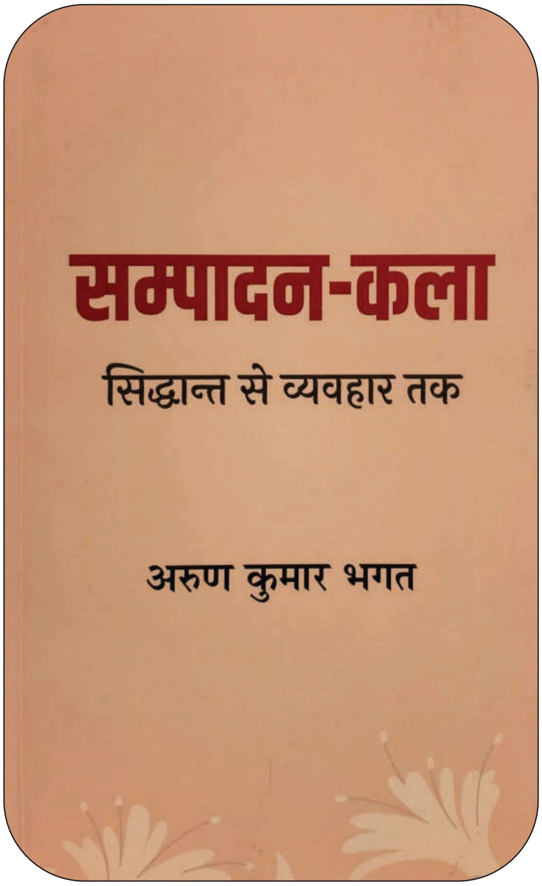

आज जब मीडिया का स्वरूप तेजी से बदल रहा है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डिजिटल पत्रकारिता तथा मल्टीमीडिया कंटेंट का दौर है, तब संपादन की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे समय में यह पुस्तक संपादन को केवल तकनीकी प्रक्रिया न मानकर एक सृजनात्मक कला के रूप में स्थापित करती है। प्रो.भगत का यह प्रयास इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि हिंदी में संपादन विषय पर उपलब्ध गंभीर और समकालीन पुस्तकों की संख्या अपेक्षाकृत कम है।

पुस्तक का पहला अध्याय संपादन के अर्थ, उद्देश्य और महत्त्व पर केंद्रित है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि संपादन केवल त्रुटियों को दूर करने का कार्य नहीं, बल्कि सामग्री को अधिक प्रभावी, संतुलित और संप्रेषणीय बनाने की प्रक्रिया है। यह अध्याय पाठकों को संपादन की मूल अवधारणा से परिचित कराता है और आगे के अध्यायों की मजबूत आधारभूमि तैयार करता है।

दूसरे अध्याय में संपादन कला के शिल्प, तकनीकों, उपकरणों और विभिन्न सोपानों की विस्तार से चर्चा की गई है। विशेष रूप से संपादन के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों और नैतिक पक्षों का उल्लेख पुस्तक को अधिक प्रासंगिक बनाता है। पुस्तक का तीसरा अध्याय प्रिंट मीडिया में संपादन के सिद्धांतों पर केंद्रित है। समाचारों और अन्य पाठ्य सामग्री के चयन, संपादन तथा प्रस्तुतीकरण के नियमों को व्यवस्थित ढंग से समझाया गया है।

चौथे अध्याय की विशेषता यह है कि इसमें न्यूज़रूम की कार्यप्रणाली का व्यावहारिक परिचय दिया गया है। लेखक ने संगठनात्मक पदानुक्रम, कार्य-विभाजन और समाचार संपादन की प्रक्रिया को अत्यंत सरलता से स्पष्ट किया है। यह अध्याय पाठकों को मीडिया संस्थानों के आंतरिक संसार से परिचित कराता है।

पुस्तक का पाँचवाँ अध्याय शीर्षक लेखन पर आधारित है, जिसे इस कृति का सबसे आकर्षक और उपयोगी भाग कहा जा सकता है। पत्रकारिता में शीर्षक ही वह माध्यम है जो पाठक का ध्यान सबसे पहले आकर्षित करता है। लेखक ने शीर्षक लेखन की तकनीक, शैली, प्रकार और आवश्यक कौशल का विस्तृत वर्णन किया है।

इसके बाद के अध्यायों में लेखन, पुनर्लेखन, भाषा-शैली, स्टाइल बुक, समाचार चयन, इंट्रो लेखन, समाचार संरचना तथा चित्र संपादन जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है। अंतिम अध्याय में समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के पृष्ठ-सज्जा के सिद्धांतों, चुनौतियों और व्यावहारिक पक्षों की प्रभावशाली विवेचना की गई है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरल, प्रवाहपूर्ण और शिक्षणोन्मुख भाषा है। लेखक ने जटिल अवधारणाओं को भी सहज उदाहरणों के माध्यम से समझाया है, जिससे यह पुस्तक केवल पाठ्यक्रम की आवश्यकता भर नहीं रह जाती, बल्कि एक व्यवहारिक मार्गदर्शिका का रूप धारण कर लेती है।

कुल मिलाकर ‘संपादन-कला : सिद्धांत से व्यवहार तक’ पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में एक उपयोगी, प्रासंगिक और संग्रहणीय कृति है। यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए, बल्कि पत्रकारों, संपादकों तथा मीडिया की कार्यप्रणाली को समझने के इच्छुक प्रत्येक पाठक के लिए समान रूप से लाभकारी सिद्ध होगी।

भारत भाग्य विधाता

फिल्म समीक्षा –डॉ. अनुपमा भारद्वाज (मीडिया)

फिल्म : भारत भाग्य विधाता
निर्देशक : मनोज तापड़िया
संगीत : अमन पंत
मुख्य कलाकार : कंगना रनौत, गिरिजा ओक, स्मिता तांबे, प्रिया अरुण बेर्डे, आशा शेलार एवं अन्य
रेटिंग : ★★★★☆ (4/5)

26/11 मुंबई आतंकी हमले भारतीय इतिहास के उन घावों में से हैं जिन्हें समय भी पूरी तरह नहीं भर पाया है। इस घटना पर पहले भी अनेक फिल्में बन चुकी हैं, लेकिन भारत भाग्य विधाता उस त्रासदी के एक ऐसे पक्ष को सामने लाती है जिस पर अपेक्षाकृत कम चर्चा हुई है। यह फिल्म उन डॉक्टरों, नर्सों और अस्पताल कर्मचारियों को केंद्र में रखती है जिन्होंने भय और अनिश्चितता के बीच भी अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए मानवता की मिसाल कायम की।

निर्देशक मनोज तापड़िया ने कहानी को सनसनीखेज बनाने के बजाय संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टि के साथ प्रस्तुत किया है। फिल्म का सबसे बड़ा गुण यही है कि यह दर्शक को लगातार याद दिलाती है कि असाधारण परिस्थितियों में भी साधारण लोग किस प्रकार असाधारण साहस का परिचय देते हैं। यहाँ नायकत्व किसी बड़े संवाद या चकाचौंध भरे दृश्य में नहीं, बल्कि दूसरों की रक्षा के लिए उठाए गए छोटे–छोटे किंतु साहसिक कदमों में दिखाई देता है।

कंगना रनौत ने अपने किरदार को गरिमा, संतुलन और गंभीरता के साथ निभाया है। उनका अभिनय संयमित है और कहानी की आवश्यकता के अनुरूप प्रभाव छोड़ता है। अन्य कलाकारों ने भी अपने पात्रों के साथ पूरा न्याय किया है, जिससे फिल्म का यथार्थ और विश्वसनीयता दोनों सशक्त होते हैं।

अमन पंत का संगीत और पृष्ठभूमि संगीत फिल्म की भावनात्मक गहराई को और बढ़ाता है। गीतों की संख्या कम है, लेकिन वे कथा के प्रवाह को बाधित करने के बजाय उसे और प्रभावशाली बनाते हैं। संगीत दर्शकों को पात्रों की भावनाओं से जोड़ने में सफल रहता है।

फिल्म की कुछ सीमाएँ भी हैं। कुछ स्थानों पर कथा की गति धीमी प्रतीत होती है और कुछ प्रसंगों को अधिक विस्तार दिया जा सकता था। फिर भी फिल्म अपने मूल उद्देश्य से कहीं नहीं भटकती।

भारत भाग्य विधाता केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि उन अनगिनत कर्मयोगियों को श्रद्धांजलि है जो संकट की घड़ी में बिना किसी पहचान, प्रशंसा या पुरस्कार की अपेक्षा के अपना दायित्व निभाते हैं। फिल्म समाप्त होने के बाद दर्शक के मन में आतंक की भयावहता से अधिक मानवता, सेवा और साहस की शक्ति अंकित रह जाती है और यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

अंतरिक्ष अनुसंधान में एआई का बढ़ता उपयोग

संकलनकर्ता –आर्या कुमारी (छात्रा, आई.एम.एस., गाजियाबाद)

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की क्षमता अब केवल एक क्षेत्र तक सीमीत नहीं रही, एआई तीव्र गती के साथ अपनें कदम हर क्षेत्र में जमा रहा है। अंतरिक्ष की गुत्थियों को सुलझाने से लेकर इससे संबंधित डेटा विश्लेषण जैसे कामों में अंतरिक्ष जैसे विशाल विषय को इस नई तकनीक ने हमारे वैज्ञानिकों के लिए आसान प्रभावशाली विषय बना दिया है। एआई में शामिल कई नई तकनीक जैसे मशीन लर्निंग, डेटा विश्लेषण एवं डीप लर्निंग आकड़ो का ब्योरा अब समय की बचत रहते कर देते है।

मौसम पैटर्न की जांच से लेकर, गैसीय विशाल ग्रह जैसे– बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून ऐसे ग्रहों के वर्गीकरण में भारी मात्रा में डेटा प्रौद्योगिकी का उपयोग कर एआई विश्लेषण की प्रक्रिया संभावित तौर पर सरल करता जा रहा है। अंतरिक्ष मिशनों के दौरान रोबोटिक रोवर्स से की गई छानबीन और खगोलीय पिंडों की तस्वीरों का आंकलन कर खतरे को मांपना और सावधानी बरतने में सहायता करता है।

भारत सरकार अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से जुड़ी कई परियोजनाओं पर भविष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य कर रहीं है। जैसे ISRO से जुड़ी Project Netra इस परियोजना के तहत, पृथ्वी के चारो ओर भ्रमण करते उपग्रहों पर नजर रख आपस के टकराव से अवगत रहना, और अंतरिक्ष मलबे की निगरानी करने में मदद हो सकती है। इसके अलावा Satellite Data Analysis और Autonomous Spacecraft, अंतरिक्ष में भेजे गए उपग्रह पृथ्वी पर बड़े मात्रा में डेटा तेजी से भेजते है।

इस डेटा में देश के विभिन्न हिस्सो से जुड़ी जानकारी भी हो सकती है उदाहरण के तौर पर अगर किसी क्षेत्र में बाढ़, सूखापन की संभावना बनती है तो इस एआई तकनीक की मदद से वैज्ञानिक इसका आंकलन घटना से पहले कर पायेंगे। Autonomous Spacecraft (स्वायत्त अंतरिक्ष यान) जैसे यान एआई की सहायता से बिना लगातार वैज्ञानिक निर्देश के स्वयं निर्णय लेने के लिए सक्षम है। इन प्रमुख परियोजनाओं के माध्यम से अंतरिक्ष अनुसंधान को आधुनिक रुप से कुशल बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

डिजिटल नवाचार : आत्मनिर्भर भारत की नई पहचान

-आभांशु द्विवेदी

डिजिटल युग में आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल घरेलू उत्पादन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि तकनीकी नवाचार, डेटा संप्रभुता और स्वदेशी डिजिटल समाधानों के विकास से भी जुड़ गया है। आज भारत कई ऐसे नए डिजिटल परिवर्तनों का साक्षी बन रहा है, जो देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इनमें सबसे प्रमुख है इंडिया एआई मिशन, जिसके माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाधान विकसित किए जा रहे हैं। स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और प्रशासन जैसे क्षेत्रों में एआई का उपयोग न केवल दक्षता बढ़ा रहा है, बल्कि स्वदेशी तकनीकी क्षमता को भी मजबूत कर रहा है। इसके अतिरिक्त, सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में भारत का बढ़ता निवेश तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है। चिप निर्माण सुविधाओं की स्थापना से भविष्य में आयात पर निर्भरता कम होगी और उच्च कौशल आधारित रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

ओएनडीसी (Open Network for Digital Commerce) ने ई–कॉमर्स के क्षेत्र में एक नया मॉडल प्रस्तुत किया है। यह छोटे व्यापारियों और स्थानीय विक्रेताओं को बड़े डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर निर्भर हुए बिना व्यापक बाजार तक पहुँच प्रदान कर रहा है, जिससे समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

साथ ही, ड्रोन तकनीक और एग्री–टेक नवाचार कृषि क्षेत्र में नई क्रांति ला रहे हैं। फसल निगरानी, उर्वरक छिड़काव और भूमि सर्वेक्षण जैसे कार्यों में ड्रोन के उपयोग से उत्पादकता बढ़ रही है तथा किसानों को आधुनिक तकनीकों का लाभ मिल रहा है।

भारत का बढ़ता स्टार्टअप इकोसिस्टम, विशेष रूप से डीप–टेक, फिनटेक, स्पेस–टेक और हेल्थ–टेक क्षेत्रों में, नवाचार आधारित विकास को गति प्रदान कर रहा है। ये स्टार्टअप न केवल नई समस्याओं के समाधान प्रस्तुत कर रहे हैं, बल्कि रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर भी सृजित कर रहे हैं।

स्पष्ट है कि एआई, सेमीकंडक्टर, ड्रोन तकनीक, डिजिटल कॉमर्स और नवाचार आधारित स्टार्टअप संस्कृति जैसे नए डिजिटल परिघटनाएँ आत्मनिर्भर भारत की नींव को सुदृढ़ बना रही हैं। तकनीक का यह नया दौर भारत को ऐसे भविष्य की ओर अग्रसर कर रहा है, जहाँ आत्मनिर्भरता ज्ञान, नवाचार और डिजिटल सशक्तिकरण पर आधारित होगी।

यंग अचीवर्स

संकलनकर्ता -पल्लवी भारद्वाज, मीडिया छात्रा

भारत में हमेशा से ही बच्चों में शिक्षा को लेकर होड़ लगी रहती है, लेकिन आज हमारे देश के बच्चे केवल शिक्षा के श्रेत्र में ही नहीं बल्कि विभिन्न खेलो के क्षेत्र में भी बहुत ही कम उम्र में सफलता प्राप्त कर रहे है। आज हम बात करेंगे कुछ ऐसे युवा खेल प्रतिभाओं की जिन्होंने बहुत ही कम उम्र में देश के अलग अलग कोने से निकलकर अपनी असाधारण प्रतिभा, परिश्रम और कला के जरिए देश का नाम रोशन कर अपनी पहचान बना रहे है।

1. **वेदा सरफरे :** महाराष्ट्र के रत्नागिरी श्रेत्र की रहने वाली यह नन्हीं बालिका एक बाल तैराक है, जिसके कारनामे ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। इस बालिका ने मात्र 1 साल 9 महीने की नन्हीं सी उम्र में 100मीटर की दूरी को चार लैंप्स में पूरा कर मात्र 10 मिनट 8 सेकंड में तैरकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर लोगों को चकित कर दिया और इस उपलब्धि के लिए इस बालिका को भारत की सबसे कम उम्र की 100 मीटर तैराक के रूप में मान्यता मिली। केवल 9 माह की आयु में इस नन्हीं जलपरी ने पहली बार पानी में प्रशिक्षण लेना शुरू किया, जहां उनके प्रशिक्षक और माता पिता खेल खेल में तैराकी को तकनीक, संतुलन आदि सिखाया करते थे। वेदा ने यह उपलब्धि रत्नागिरी नगर निगम स्विमिंग पूल में 1 नवम्बर, 2025 को हासिल की और उनके इस रिकॉर्ड को आधिकारिक रूप में 25 नवंबर, 2025 को "इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स" के जरिए प्रमाणित किया गया।

2. **अर्शिया गोस्वामी :** उत्तर भारत के पंचकूला, हरियाणा की रहने वाली यह 11 वर्षीय बालिका एक बाल वेटलिफ्टर और फिटनेस प्रतिभा है, जिसने अपनी इस असाधारण क्षमता से लोगों के बीच लोकप्रियता हासिल करली है। महज 9 वर्ष की आयु में अर्शिया ने अपने शरीर से लग भग तीन गुना अधिक वजन, 75 किलोग्राम का वेटलिफ्ट सफलतापूर्वक उठाकर सबको चकित कर दिया और एक नया रिकॉर्ड 2024 में बनाया। अपने पिता से प्रेरित होकर उन्होंने इस खेल को अपना जुनून बनाया, और 5 वर्ष की आयु से ही अपना प्रशिक्षण शुरु किया। भारत की सबसे कम उम्र की वेटलिफ्टर का रिकॉर्ड भी इस बालिका के नाम पर है, जो उन्होंने मात्र 6 वर्ष की आयु में 45किलोग्राम का वजन उठाकर हासिल किया था। सोशल मीडिया पर भी अर्शिया की विडियोज को लाखों लोगों ने उनकी इस असाधारण क्षमता को पसंद कर उनकी प्रशंसा भी की।

3. **ईशान खान :** स्केटिंग और बुद्धिमत्ता का अद्भुत मेल रखने वाले बाल खिलाड़ी ईशान खान केरलम के रहने वाले है जिन्हें इनलाइन स्पीड स्केटिंग और मानसिक गणना, दोनों में अद्भुत कौशल हासिल है। ईशान ने खेल और बौद्धिक शमता के संयोजन का एक अद्भुत उदाहरण दिया है जहां उन्होंने केवल 10 वर्ष की आयु में स्केटिंग करते हुए कठिन मानसिक गणनाओं के उत्तर दे कर रिकॉर्ड बुक्स में अपना नाम दर्ज कराया। इन्हें भारत के उभरते हुए स्केटिंग सितारों में गिना जाता है। उनकी यह प्रतिभा केरलम में आयोजित विभिन्न विशेष कार्यक्रमों और रिकॉर्ड प्रयासों के दौरान सामने आई। इस प्रतिभाशाली बालक ने अपनी मेहनत, निरंतर अभ्यास और प्रदर्शन से राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशेष पहचान बनाई है।

4. **वाका लक्ष्मी प्राग्निका :** भारत की सबसे कम उम्र की शतरंज प्रतिभाओं मै से एक 8 वर्षीय वाका लक्ष्मी प्राग्निका, गुजरात की रहने वाली है। वर्ष 2025 में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसा कारनामा कर दिखाया जिससे उन्होंने अपना व भारत का नाम रोशन कर दिया, महज 7 वर्ष की आयु में यह बाल शतरंज खिलाड़ी एक विश्व चैंपियन बन चुके है, जहां इन्होंने सर्बिया में आयोजित एफआईडीई वर्ल्ड स्कूल चेस चैंपियनशिप (FIDE World School Chess Championship) में अंदर–7 गर्ल्स वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने इस प्रतियोगिता में सभी 9 मुकाबले जीतकर पूर्ण अंक से यह जीत हासिल की थी, उनकी इस शानदार उपलब्धि और प्रदर्शन के लिए उन्हें राष्ट्रपति द्वारा "प्रधानमंत्री बाल पुरस्कार" से सम्मानित भी किया गया। प्राग्निका की शतरंज में रुचि कोविड महामारी के दौरान शुरू हुई और धीरे धीरे बढ़ती गई, और बाद में उन्होंने सूरत में अपनी प्रारंभिक प्रशिक्षण लेना शुरू किया। इस बालिका की अद्भुत प्रतिभा और बौद्धिक क्षमता के लिए उन्हें बाल अचीवर्स (Child Achievers) की सूची में भी शामिल किया जा चुका है।

गृहस्थ की भक्ति

- डॉ. अल्पना बिमल

नारद जी बात–बात पर नारायण–नारायण कहा करते और इस प्रकार दिन में कई बार भगवान का नाम लेते थे। एक दिन उनके मन में यह विचार आया कि वह बहुत बार भगवान का नाम लेते हैं। अतः वही भगवान के सबसे बड़े भक्त हैं।

यह सोचकर नारद जी विष्णु भगवान के पास पहुंचे और पूछा, भगवान ! आपका सबसे बड़ा भक्त कौन है?

विष्णु भगवान ने बताया, 'अमुक गांव का अमुक किसान मेरा सबसे बड़ा भक्त है।'

नारद जी को बहुत धक्का लगा। उन्होंने भगवान जी के कथन की पुष्टि के लिए, अपने को संभालते हुए, भक्त किसान का नाम व पता नोट किया तथा उस किसान के गांव चल दिए। वहां जाकर देखा कि किसान ने सुबह 4 बजे उठकर दो बार नारायण–नारायण कहा। फिर नांद में भूसा, खली व पानी डालकर बैलों को लगा दिया। दैनिक क्रिया के बाद, सुबह का जलपान कर सूर्योदय के साथ ही हल–बैल लेकर खेतों में जा पहुंचा। पूर्वाह्न 10 बजे पत्नी द्वारा लाया कलेवा खाकर पुनः खेत में काम करने लगा। दोपहर में घर जाकर खाना खाया, सुर्ती खायी। बैलों को नांद पर लगाया। अपराह्न में खेतों में जाकर काम किया। ठीक, सूर्यास्त से पहले घर लौटा। हाथ मुंह धोकर खाना खाया। दो बार नारायण–नारायण कहकर सो गया।

नारद जी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि किसान द्वारा पूरे दिन में केवल चार बार नारायण–नारायण कहा गया, जबकि वे स्वयं दिनभर नारायण–नारायण कहते हैं, किन्तु उन्हें भगवान विष्णु अपना सबसे बड़ा भक्त नहीं मानते हैं। नारद जी ने अपनी आशंका व व्यथा विष्णु भगवान को बताई। तब विष्णु भगवान ने नारद को एक पूरा जल भरा कटोरा दिया और कहा, 'इसको लेकर आप सूर्यास्त तक भ्रमण कीजिए, लेकिन ध्यान रहे, इसमें से एक बूंद पानी भी न गिरे। यदि ऐसा होता है, तो मेरा सुदर्शन चक्र आपके पीछे रहेगा, एक बूंद भी पानी गिरा तो वह आपकी गर्दन काट लेगा।' नारद जी ने जल भरा कटोरा लिया और सुबह से शाम तक भ्रमण किया। सुदर्शन चक्र ने पीछा किया। सूर्यास्त होने तक भ्रमण पूरा करने तथा कटोरे से एक बूंद भी पानी नहीं गिरने देने की सफलता पर नारद जी ने बड़े राहत की सांस ली।

नारद जी विष्णु भगवान के पास पहुंचे। विष्णु जी ने पूछा, 'भ्रमण कैसा रहा?'

नारद जी ने उत्तर दिया, 'आपके सुदर्शन चक्र व भरे पानी के कारण भ्रमण में तनाव बना रहा।'

विष्णु जी ने पूछा, 'भ्रमण में कितनी बार मेरा नाम लिया?'

'भगवान ! एक तो जल भरा कटोरा लेकर चलना और उस पर आपके सुदर्शन चक्र का पीछे–पीछे चलना– उसमें पूरा ध्यान इन बातों पर था। आपका नाम कहां से लेता।' नारद जी ने उत्तर दिया।

तब विष्णु जी ने कहा, 'इसी प्रकार गृहस्थ जीवन की आपाधापी, आजीविका अर्जन की गला काट देने के भय वाली कठिनाइयों के बाद भी, यदि किसान सुबह–शाम मेरा नाम ले लेता है, तो निश्चित रूप से वह सर्वश्रेष्ठ भक्त है।'

ससुराल

– डॉ. शुचि चौहान

क्लिनिक से लौटते समय कविता बेहद थकी हुई थीं। आज उसका जन्मदिन भी था, इसलिए वह जल्दी घर पहुँचना चाहती थी। घर के बाहर पलाश उसका इंतजार कर रहा था। अंदर प्रवेश करते ही उसे अंधेरा दिखाई दिया, लेकिन अगले ही क्षण रोशनी फैल गई। सामने उसके सास–ससुर के साथ उसके अपने माता–पिता खड़े थे। सभी ने एक साथ जन्मदिन का गीत गाकर उसे चौंका दिया। पूरा घर उसकी पसंदीदा रजनीगंधा की खुशबू से महक रहा था।

रसोई में जाकर उसने देखा कि उसकी माँ ने उसकी पसंद की मशरूम की सब्जी बनाई थीं और सासू माँ ने अपने हाथों से आटे का हलवा। दोनों माताएँ एक–दूसरे को देखकर मुस्कुरा रहीं थीं, मानो बेटी अब दोनों की साझा जिम्मेदारी और स्नेह का केंद्र हो। भोजन, हँसी–मजाक और खेलों के बीच रात कब बीत गई, पता ही नहीं चला।

सबके सो जाने के बाद कविता बालकनी में खड़ी हो गई। हवा में घुली रजनीगंधा की सुगंध उसे अतीत में ले गई। उसे अपनी शादी का दिन याद आ गया। वह तब एमबीबीएस के तीसरे वर्ष की छात्रा थी। विदाई के समय उसकी माँ बार–बार रो रहीं थीं। तभी पलाश ने उनसे पूछा कि वे इतना परेशान क्यों हैं। माँ ने भर्राए स्वर में कहा, "मुझे डर है कि कहीं मेरी बेटी की पढ़ाई अधूरी न रह जाए।"

पलाश ने उनका हाथ थामकर कहा था, "अब यह मेरी जीवनसंगिनी है। इसका सपना मेरा सपना है। आप निश्चिंत रहिए।"

उस दिन के बाद पलाश ने अपने वादे को पूरी तरह निभाया। एमबीबीएस से लेकर एमएस तक की कठिन यात्रा में वह और उसका पूरा परिवार कविता के साथ खड़ा रहा। देर रात की पढ़ाई, इंटर्नशिप की थकान और परीक्षाओं के तनाव के बीच उसे कभी यह महसूस नहीं हुआ कि वह ससुराल में है। उसे हमेशा अपनेपन और सहयोग का वातावरण मिला।

आज पचास वर्ष की आयु में खड़ी कविता सोच रही थी कि कितनी लड़कियों के सपने विदाई के साथ ही दम तोड़ देते हैं, लेकिन उसके सपनों को दोनों परिवारों ने मिलकर उड़ान दी। तभी पलाश उसके पास आकर खड़ा हो गया। कविता ने उससे कहा, "आज माँ की वह बात और तुम्हारा वह वादा याद आ रहा है।"

पलाश मुस्कुराया और बोला, "वह वादा नहीं, सपनों की साझेदारी थी।"

कुछ देर बाद कविता ने मजाक में कहा, "जानते हो, आज मैं पचास साल की हो गई हूँ।" पलाश ने हँसते हुए उत्तर दिया, "मुझे तो आज भी वही बाईस साल वाली लड़की दिखती हो, जो शादी के दिन मुझे शक की निगाहों से देख रही थी।"

दोनों हँस पड़े। फिर पलाश ने गंभीर होकर कहा, "तुम्हारी माँ ने मुझसे तुम्हारे सपनों का ध्यान रखने को कहा था, लेकिन सच यह है कि तुमने मेरे जीवन को भी मेरे सपनों से कहीं अधिक सुंदर बना दिया।"

तभी अंदर से सासू माँ की आवाज़ आई, "अरे, 28 साल बाद भी नई–नई शादी वाले नखरे खत्म नहीं हुए क्या?" दोनों फिर खिलखिला उठे।

कविता ने पलाश का हाथ कसकर पकड़ लिया। उसे लगा कि जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल सफलता या सम्मान नहीं, बल्कि ऐसा जीवनसाथी और ऐसा ससुराल है, जो सपनों को पंख दे और वर्षों बाद भी प्रेम को उतना ही जीवंत बनाए रखे।

बंगाल के युवा क्रांतिकारी : अनाथबन्धु और मृगेन्द्र दत्त

- रामकुमार शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, विद्या भारती

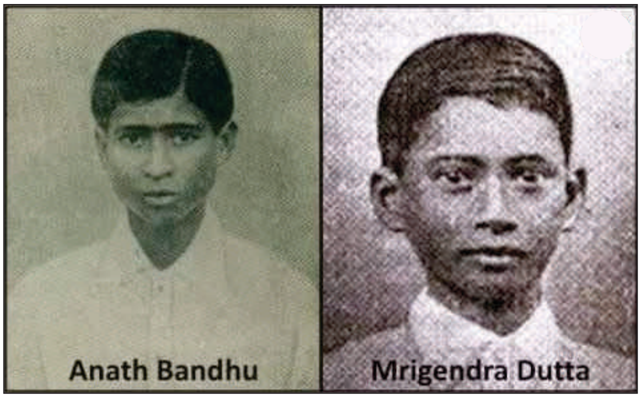

Anath Bandhu Mrigendra Dutta

भारत की स्वतंत्रता का श्रेय उन क्रांतिकारी युवकों को भी जाता है, जो अपनी जान हथेली पर लेकर घूमते थे और किसी भी समय भारत की स्वतंत्रता के लिए कुछ भी कर देते थे। ऐसे ही दो मित्र थे 21 वर्ष के अनाथ बंधु पंजा एवं 17 वर्ष के मृगेंद्र कुमार दत्त। उन दिनों बंगाल के मिदनापुर जिले में क्रान्तिकारी गतिविधियाँ जोरों पर थीं। इससे परेशान होकर अंग्रेजों ने वहाँ जेम्स पेड्डी को जिलाधिकारी बनाकर भेजा। यह बहुत क्रूर अधिकारी था। क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी शासन को चेतावनी दी थी कि वे इसके बदले किसी भारतीय को यहाँ भेजें, लेकिन उन्होंने उनकी बातों को हल्के में लिया। अतः एक दिन जेम्स पेड़ी की गोली से हत्या कर दी गई। अंग्रेज इससे बौखला गए। लेकिन फिर भी उन्होंने जेम्स पेड़ी से भी ज्यादा क्रूर राबर्ट डगलस को वहीं भेजा। एक दिन जब वह कार्यालय में बैठा फाइलें देख रहा तो दो युवकों ने उसे भी गोली मार दी। दोनों में से एक युवक तो भाग गया पर दूसरे प्रद्योत कुमार पकड़ा गया। अंग्रेजों ने उनको फांसी दे दी। दो जिलाधिकारियों की हत्या के बाद भी अंग्रेजों ने अबकी बार बी.ई.जे. बर्ग को भेजा। बर्ग सदा दो अंगरक्षकों के साथ चलता था। मगर क्रांतिवीरों ने भी ठान लिया कि इस जिले में किसी अंग्रेज जिलाधिकारी को नहीं रहने देंगे।

वर्ग फुटबाल का शौकीन था और टाउन क्लब की ओर से खेलता था। 2 सितम्बर, 1933 को टाउन क्लब और मौहम्मद् स्पोर्टिंग के बीच मुकाबला था। खेल शुरू होने से कुछ देर पहले बर्ग ने शरीर गरम करने के लिये फुटबाल में दो-चार किक ही मारी थीं कि उसके सामने दो बालक, अनाथ बन्धु और मृगेन्द्र कुमार दत्त आये और जेब में से पिस्तौल निकालकर बर्ग पर चला दीं। वह वहीं मर गया। वर्ग के अंगरक्षकों ने जवाबी कार्रवाई में दोनों बालकों पर गोली चला दी। अनाथ बंधु ने वहीं प्राण त्याग दिए और अत्यधिक खून बह जाने के कारण मृगेंद्र ने अगले दिन अस्पताल में दम तोड़ दिया।

इस घटना के बाद पुलिस ने हर खिलाड़ी की तलाशी ली। निर्मल जीवन घोष, ब्रजकिशोर चक्रवर्ती और रामकृष्ण राय के पास भी भरी हुई पिस्तौलें मिलीं। ये तीनों भी क्रान्तिकारी दल के सदस्य थे। पुलिस ने इन तीनों को पकड़ लिया और मुकदमा चलाकर मिदनापुर के केन्द्रीय कारागार में फांसी पर चढ़ा दिया। तीन जिलाधिकारियों की हत्या के बाद अंग्रेजों ने निर्णय किया कि अब कोई भारतीय अधिकारी ही मिदनापुर भेजा जाये। अंग्रेज अधिकारियों के मन में भी भय समा गया था। कोई वहां जाने को तैयार नहीं हो रहा था। इस प्रकार क्रांतिकारी युवकों ने अपने बलिदान से अंग्रेजी शासन को झुका दिया।

और तू सोया है...

हे हिन्दू ! लुट रहा हिंद औ तू सोया है,
लूटी जाती हिंदी; पर क्या तू रोया है?
पुनः जा रहा धन गोरे देशों में भारी
आह, नहीं अनुभव होती तुझको अब ख्वारी !
गोरा गया किन्तु गोरी पलटन अब आई
किन्तु तुझे क्या दीखी राष्ट्रधर्म-रुसवाई?
नंगा-भूखा राष्ट्र किन्तु धनराशि लुटाते निज,
पर देकर दान, लुटेरे ना शरमाते।
हिन्दी पर अंग्रेजी-उर्दू लादी जाती
आह, नहीं क्यों फट जाती है तेरी छाती ?
आह, नष्ट की जाती अतुलित संस्कृति तेरी
फिर भी तू उठ नहीं बजाता है रणभेरी!
भूल गया हेमू को और राणा प्रताप को,
भूल शिवाजी को तू भूला स्वयं आप को;
लक्ष्मी को विस्मृत कर तूने लक्ष्मी खोई,
भूल गया आजाद-रक्त ने धरती धोई ?
हिन्दू ! तेरा हिंद और है हिंदी तेरी,
भारतमाता मुकुट और है बिंदी तेरी;
चेत, निभा दायित्व, प्राण प्रण से छोटा है,
सुख का कोई भी आसन रण से छोटा है!

केशव संवाद अपने सकारात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण के कारण पाठकों के बीच एक विशिष्ट पहचान बना रही है। वर्तमान समय में ऐसी पत्रिकाओं की आवश्यकता और भी अधिक है, जो समाज में आशा, जागरूकता और सकारात्मक सोच का प्रसार करें। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में देश–विदेश में भारतीय समाज द्वारा किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों तथा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों पर नियमित स्तंभ प्रकाशित किए जाएँ। इससे पाठकों को प्रेरणा मिलेगी और समाज के सकारात्मक पक्षों को व्यापक पहचान प्राप्त होगी। आपकी पूरी टीम को इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

– सुनीता मिश्रा सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

केशव संवाद का नियमित अध्ययन करने का अवसर मिलता है। पत्रिका में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रहित से जुड़े विषयों को सरल और सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो सराहनीय है। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में समय–समय पर भारतीय संस्कृति, हमारे महापुरुषों के विचारों तथा समाज में चल रहे प्रेरणादायक सेवा कार्यों पर विशेष लेख भी प्रकाशित किए जाएँ। इससे पाठकों, विशेषकर युवाओं को अपने समाज और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने की प्रेरणा मिलेगी। मुझे विश्वास है कि केशव संवाद आगे भी अपने सार्थक और सकारात्मक प्रयासों से समाज को जागरूक एवं प्रेरित करती रहेगी।

– एडवोकेट युवराज ए.के. शर्मा, प्रयागराज

केशव संवाद पढ़कर अच्छा लगता है, क्योंकि इसमें सकारात्मक और प्रेरणादायक विषयों को प्रमुखता दी जाती है। ऐसे प्रयास समाज में आशा और उत्साह का संचार करते हैं। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में उन लोगों की प्रेरक जीवन–कथाएँ भी प्रकाशित की जाएँ, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए सफलता प्राप्त की है। ऐसे अनुभव विशेष रूप से युवाओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होंगे। आशा है कि आपकी पत्रिका आगे भी समाज को सकारात्मक दिशा देने का यह महत्वपूर्ण कार्य करती रहेगी।

धन्यवाद।

–मंजू तोमर, जागृति विहार, मेरठ

मैं नियमित रूप से केशव संवाद पढ़ती हूँ। पत्रिका में सकारात्मक समाचारों और समाज के अच्छे कार्यों को स्थान दिया जाता है, जो आज के समय में बहुत आवश्यक है। इसके लिए आपकी पूरी टीम बधाई की पात्र है। मेरा सुझाव है कि प्रकाशित समाचारों के साथ उनसे जुड़ी थोड़ी पृष्ठभूमि या अतिरिक्त जानकारी भी दी जाए। इससे पाठकों को विषय को और अच्छी तरह समझने में मदद मिलेगी। आशा है कि केशव संवाद इसी प्रकार समाज में सकारात्मक सोच और जागरूकता का प्रसार करती रहेगी।

धन्यवाद।

–शालिनी सिंह, पैन ओएसिस, सेक्टर–70, नोएडा

सूचना : सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन उपरांत वे इसके विषय–वस्तु, प्रस्तुति एवं कलेवर के संबंध में अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का कार्य करेगी। चयनित प्रतिक्रियाओं को 'पाठक का कोना' स्तंभ में आपके नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा। आप अपनी प्रतिक्रिया केशव संवाद पत्रिका की ईमेल आईडी keshavsamvad@gmail.com ***पर भेज सकते हैं।***

रोजगार समाचार

इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

~मानस वर्मा
सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
दिल्ली विश्वविद्यालय

(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 01 जुलाई – 31 जुलाई 2026)

क्रम संख्या (Serial No.)	प्रारंभ तिथि (Starting Date)	परीक्षा तिथि / अंतिम तिथि (Exam Date / Last Date)	विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name)	टिप्पणी / आधिकारिक लिंक (Remarks / Official Link)	QR
1	08 जून 2026	06 अगस्त 2026	National Commission for Minorities Educational Institutions – Deputy Secretary (Others) (Recruitment)	ncmci.nic.in स्कैन करें	
2	24 जून 2026	08 जुलाई 2026	State Bank of India (SBI) Probationary Officer (PO) 2026 (Recruitment)	sbi.co.in स्कैन करें	
3	05 जून 2026	15 जुलाई 2026	HPPSC Assistant Professor (College Cadre) 2026 (Recruitment)	hppsc.hp.gov.in स्कैन करें	
4	10 जून 2026	20 जुलाई 2026	National High Speed Rail Corporation Limited (NHSRCL)– Various Posts (Recruitment)	nhsrcl.in स्कैन करें	
5	20 जून 2026	21 जुलाई 2026	NIACL Apprentice 2026 (Recruitment)	niacl.com स्कैन करें	
6	23 जून 2026	24 जुलाई 2026	Border Roads Organisation (BRO) – Various Posts (GREF) 2026 (Recruitment)	bro.gov.in स्कैन करें	
7	01 जुलाई 2026	31 जुलाई 2026	AICTE Internship Portal – Various Internships (Internship)	internship.aicte-india.org स्कैन करें	
8	01 जुलाई 2026	31 जुलाई 2026	NITI Aayog – YUVA Mentorship Internship Programme 2026 (Internship)	niti.gov.in स्कैन करें	
9	01 जुलाई 2026	31 जुलाई 2026	DRDO Summer Internship Programme 2026 (Scientist B) (Internship)	drdo.gov.in स्कैन करें	
10	01 जुलाई 2026	31 जुलाई 2026	Reserve Bank of India (RBI) Internship Programme 2026 (Internship)	rbi.org.in स्कैन करें	

इस माह के प्रमुख अवसर (Highlights of the Month)

रोजगार (Recruitments)
- SBI PO 2026
- HPPSC Assistant Professor
- NHSRCL Various Posts
- NIACL Apprentice
- BRO Various Posts
- NCMEI Deputy Secretary

इंटर्नशिप (Internships)
- AICTE Internship
- NITI Aayog YUVA
- DRDO Internship
- RBI Internship

परीक्षाएँ (Examinations)
- SSC CGL Tier-I
- UGC NET June 2026
- IBPS PO/MT Prelims
- RBI Grade B Phase-I
- CUET (UG) 2026

संकलित स्रोत (Compiled Sources)

- रोजगार समाचार (Employment News) – employmentnews.gov.in
- राष्ट्रीय करियर सेवा (NCS) – ncs.gov.in
- भारतीय स्टेट बैंक (SBI) – sbi.co.in
- HPPSC – hppsc.hp.gov.in
- NHSRCL – nhsrcl.in
- NIACL – niacl.com
- BRO – bro.gov.in
- AICTE Internship Portal – internship.aicte-india.org
- NITI Aayog – niti.gov.in
- DRDO – drdo.gov.in
- RBI – rbi.org.in
- SSC – ssc.nic.in
- UGC NET – ugcnet.nta.nic.in
- IBPS – ibps.in
- CUET – cuet.nta.nic.in

महत्वपूर्ण सूचना

अभ्यर्थियों को आवेदन या पंजीकरण से पूर्व संबंधित विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध नवीनतम अधिसूचना एवं पात्रता शर्तों का अवलोकन अवश्य करना चाहिए।

❁ —— सशक्त युवा – सशक्त भारत —— ❁

AI Generated

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL

OFFICE

STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects